੧ੳ वाहिगुरू जी की फतहि ॥

102

शबद गुरू

एंव

देहधारी गुरूडम्म

- ★ नकली निरंकारी
- ★ राधा स्वामी
- ★ कुका गुरू डम्म की असलियत



सिख मिशनरी कालेज (रजिः)
लुधियाना

1. गुरू

गुरु संस्कृत का शब्द है। यह 'गृ' धातु से बना है। इसका अर्थ है निगल जाना, खा जाना या समझाना। अर्थात गुरु वह है जो अज्ञान रूपी अंधेरे को ज्ञान-रूपी प्रकाश द्वारा खा जाता है और सिख को तत्व ज्ञान की पहचान करवाता है। इस प्रकार गुरु के अर्थ, प्रकाश स्वरूप, शिक्षादाता, आत्मिक ज्ञान देने वाला, बड़ा तथा श्रेष्ठ बुद्धि वाला, किये जा सकते हैं।

भाई साहिब भाई काहन सिघ जी 'नाभा' ने 'गुरमति मारतण्ड' में गुरुपद के जो अर्थ किये हैं वे बहुत ही सरल, साधारण तथा भावपूर्ण हैं। आप लिखते हैं :

"अज्ञान विनाशक, सत्य तथा हितोपदेशक का नाम गुरु है। पर इस शब्द की गुरु नानक देव जी में प्रसिद्ध श्रेष्ठ शक्ति है जो करतार द्वारा संसार मात्र के उद्धार हेतु जगत गुरु स्थापित किये गये थे।"

वाहिगुरु, अकालपुरख, सृजनहार, पालनकर्ता शिक्षा के सर्वप्रथम ज्ञानदाता हैं। इसलिये वे सब के आदि गुरु हैं। इसीलिए गुरबाणी में कई स्थानों पर 'गुरु' पद अकाल पुरख के लिए भी प्रयोग किया गया है। वाहिगुरु ने अपने ज्ञान के प्रकाश, जीवों के उद्धार तथा जगत के कल्याण हेतु श्री गुरु नानक देव जी को इस संसार में भेजा। उन्होंने अकाल पुरख द्वारा प्रदत्त ज्ञान, उच्च आदर्श, पवित्र जीवन तथा धुर की बाणी के द्वारा मानव जाति का उद्धार किया। सिख धर्म की नींव रखी। इसलिए सिख धर्म में दस पातशाहियों को 'गुरु या सतगुरु की पदवी से सम्मानित कर के याद किया जाता है। सिखी की बुनियाद ही गुरु से है।

2. गुरू की आवश्यकता

सिख धर्म ने जो मार्ग बताया है, यह कुछ विचारों या निश्चित किये हुए सिद्धांतों का समूह नहीं है बल्कि अपने आपको एक नमूने के आदर्श जीवन में ढालना है। यह नियमों या कानूनों पर निर्भर नहीं

करता—सिख होने पर निर्भर करता है। सिख के अर्थ हैं—गुरु की मति लेकर गुरु के जीवन के अनुसार अपने जीवन को ढालना।

जिस प्रकार संसार के अन्य क्षेत्रों में प्रशिक्षण आदि के लिए उस्ताद या प्रशिक्षक की आवश्यकता होती है, इसी प्रकार आध्यात्मिक क्षेत्र में भी आत्मिक उन्नति हेतु, गुरु की आवश्यकता होती है। गुरु का महान व्यक्तित्व हर समय सिख के जीवन की अगवाई करता है। बिना गुरु के महान व्यक्तित्व के न तो जीवन में समस्वरता उत्पन्न हो सकती है और न ही पूर्ण गुरु की सहायता के बिना प्रभु की अनुभूति ही संभव हो सकती है।

गुरु नानक देव जी ने जपुजी साहिब की बाणी से पूर्व मूल मंत्र में प्रभु के मिलाप का तरीका **'गुर प्रसादि'** भाव गुरू की कृपा द्वारा ही—बयान किया है। **आसा दी वार** की छटी पउड़ी में इस नुक्ते को स्पष्ट करते हुए गुरू साहिब फ़ुरमाते हैं—

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ, बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥
सतिगुर विचि आपु रखिओनु, करि परगटु आखि सुणाइआ ॥

(पृ. 466)

गुरू अंगद देव जी, गुरू की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए **आसा दी वार**, की बाणी में नीचे लिखी पंक्तियों द्वारा इस सिद्धांत को दृढ़ करवाते हुए कहते हैं—

जे सउ चंदा उगवहि, सूरज चड़हि हजार ॥

एते चाणण होदिआं, गुर बिनु घोर अंधार ॥

(पृ. 463)

गुरू के बिना अंतरआत्मा का अंधकार दूर नहीं होता। गुरू ही एक ऐसा व्यक्तित्व है जो पाप रहित आदर्श तथा एक संपूर्ण व्यक्तित्व होता है। इसीलिए गुरबाणी में कहा गया है:

भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरू करतार ॥

श्री गुरू अर्जुन देव जी गुरू की आवश्यकता तथा महानता को दर्शाते हुए बताते हैं कि गुरू के बिना संसार समुद्र से पार नहीं लगा जा सकता।

यथा—

मत को भरमि भुलै संसारि ॥
गुर बिनु कोइ न उतरसि पारि ॥१॥रहाउ॥

....

कहु नानक प्रभि इहै जनाई ॥
बिनु गुर मुकति न पाईऐ भाई ॥ (पृ. 864)

संसार में फैला हुआ भ्रम, संशय, अथवा अविश्वास ही सारे दुःख क्लेशों तथा अधोगति का मूल कारण माने गये हैं। गुरमति के अनुसार गुरू के बिना नाम अथवा निरंकार की प्राप्ति नहीं होती और न ही नाम के बिना भ्रम की निवृत्ति ही होती है। गुरू नानक देव जी कहते हैं :

बिनु सतिगुर नामु न पाईऐ भाई बिनु नामै भरमु न जाई ॥
(सोरठि महला १, पृ. 635)

मनुष्य का मन बहुत चंचल और गतिशील है। इसे पांच दूतों—काम, क्रोध, लोभ, मोह, तथा अहंकार की हठी सैना ने अपने नियंत्रण में किया हुआ है। इन विकारों को वश में किये बिना सुख और शांति नहीं मिलती। परंतु गूरू की शरण लेने पर ये वश में हो जाते हैं। यथा :

जब गुरु मिलिआ, तब मनु वसि आइिआ ॥
धावत पंच रहे, हरि धिआइआ ॥
(गउड़ी गुआरेरी महला 4, पृ. 165)

3. गुरू के गुण तथा कर्तव्य

सिख धर्म में वाहिगुरु तथा गुरु बड़ी महानता रखते हैं। किसी बड़े से बड़े व्यक्तित्व की गुरु से तुलना नहीं की जा सकती। संसार में हर असल की नकल पैदा हो जाती है। कोई वस्तु जितनो अधिक मूल्यवान होगी उतनी ही उसकी नकल भी बढ़ेगी। इसलिए मानव के कल्याण हेतु अज्ञान विनाशक, ज्ञान प्रकाशक, सत्य उपदेष्टा, परउपकारी तथा सेवक के हितों के लिए तत्पर रहने वाले कामल सतगुरु साहिबान के साथ-साथ नकली, लोभी, स्वार्थी, पाखण्डी तथा दंभी

गुरुओं की सदा भरमार रही है, अतः जिज्ञासु की अगवाई के लिए गुरुबाणो में असली तथा नकली गुरु के लक्षण तथा कर्त्तव्यों आदि को अंकित करने का महान उपकार भी किया गया है।

सतिगुरु का प्रथम लक्षण तो यह है कि उसे स्वयं अकालपुरख का ज्ञान हो और वह सदा अकालपुरख-वाहिगुरु से अभेद होकर एका-सुर रहे। ऐसे गुरु की संगत द्वारा ही सिख का उद्धार होता है।

सति पुरखु जिनि जानिआ, सतिगुरु तिस का नाउ ॥
तिस कै संगि सिखु उधरै, नानक हरि गुन गाउ ॥
(गउड़ी सुखमनी महला 5, पृ 286)

सतगुरु के अन्य महत्वपूर्ण गुण अथवा लक्षण ये हैं कि पहले वह स्वयं अंदर-बाहर से सच्चा और सच्चे आचार वाला हो और फिर वह सिख को इस सत्य को दृढ़ करवाये। उसके दर्शनों से द्वैत भावना दूर हो और तन तथा मन शीतल व आनंदित हों।

जिस मिलिऐ मनि होइ अनंदु सो सतिगुरु कहीऐ ॥
मन की दुबिधा बिनसि जाइ हरि परमपदु लहीऐ ॥
(गउड़ी बैरागणि महला 4, पृ. 168)

सतगुरु आत्मिक देन देने वाला है। वह ह्वै वृक्ष का घर, शांति का पुंज है। संपूर्ण सृष्टि को ज्ञान का प्रकाश देने वाला है। उससे आत्मिक जोवन देने वाला नाम रुपी पदार्थ मिलता है, जिसको मन में बसाने से सुख की प्राप्ति होती है।

गुरु दाता गुरु हिवै घरु गुरु दीपकु तिह लोइ ॥
अमर पदारथु नानका मनि मानिऐ सुखु होइ ॥
(वार माझ महला १, पृ. 137)

सतगुरु निरवैर है। उसका न कोई मित्र विशेष है और न कोई शत्रु। वह सबको एक समान देखता है।

सतिगुरु निरवैरु, पुत्र सत्र समाने अउगुण कटे करे सुधु देहा ॥
(रामकली दी वार महला 5, पृ. 960)

यदि कोई निंदक भी गुरु की शरण आ जाये तो गुरु उसे क्षमा करके अपने साथ मिला लेता है।

कोई निवक होवै सतिगुर का फिरि सरणि गुर आवै ॥
पिछले गुनह सतिगुरु बखसि लए सतसंगति नाल रलावै ॥
(बिलावल की वार महला 4, पउड़ी पृ. 854)

सच्चे सतगुरु का यह लक्षण भी है कि सतगुरु सिख से बदले में कुछ नहीं माँगता। वह सिखों से पदार्थ लेकर अपना धन नहीं बढ़ाता, सच्चा गुरु तो कृपा करके उपदेश देता है और सिख के मुंह में ये वस्तुएं जाते हुए वह प्रसन्न होता है।

सतिगुर प्रीति गुरसिख मुखि पाइ ॥
(गउड़ी गुआरेरी महला 4, पृ.164)

सतगुरु सिख को अपनी पूजा तक ही सीमित नहीं रखता। वह तो सिख को अकालपुरख के संग जोड़ता है और उसका मार्ग दर्शन करता है। सतगुरु बिना किसी लालच के लोगों को उपदेश देते हैं और नाम की ओर ले जाते हैं।

महा पुरखा का बोलणा होवै कितै परथाई ॥
ओहि अंमृत भरे भरपूर हहि ओना तिलु न तमाइ ॥
(सूही महला 3, पृ. 755)

इन उपरोक्त गुरु-वाक्यों से स्पष्ट है कि सिख धर्म में गुरु की कितनी महानता है तथा गुरु का व्यक्तित्व कितना ऊंचा पेश किया गया है। सिख धर्म में गुरु के तुल्य किसी और को स्थान नहीं दिया जा सकता। सिखी में गुरु-पद, गुरु नानक देव जी तथा उनके दस स्वरूप, दसों पातशाहियों को प्राप्त हुआ माना गया है।

श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से पूर्व गुरु के बारे में दो विचार प्रचलित थे। यह रिवाज था कि प्रत्येक हिंदू अपनी आत्मिक उन्नति हेतु किसी एक व्यक्ति को चुन कर अपना गुरु धारण कर लेता था और उसकी आज्ञा में चलता था। इसका फल यह होता था कि एक-एक परिवार में कई कई गुरु हुआ करते थे। ये गुरु केवल नाम के ही गुरु हुआ करते थे—परमपद को प्राप्त नहीं हुआ करते थे। दूसरी ओर एक विचार और प्रचलित था कि निरंकार धर्म को प्रकट करने के लिए स्वयं इस दुनियां में अवतार धारण करता है और मनुष्य के रूप में आता है।

सिख धर्म दोनों ही विश्वासों के विरुद्ध है। गुरू नानक देव जी यह नहीं मानते कि प्रमात्मा स्वयं अवतार धारण करता है। वह प्रमात्मा को 'अजूनी'— जो योनियों में नहीं आता—मानते हैं। प्रमात्मा मनुष्य की योनि में कभी नहीं आता। दूसरी ओर आम आदमी गुरू की पदवी नहीं ले सकते। सिख धर्म में गुरु का शब्द उन विशेष महा-पुरुषों के लिए प्रयोग किया जाता है जो अहं को मार कर निरंकार के संग अभेद हो चुके होते हैं। जिन्हें अकालपुरख ने अपने ज्ञान की निधि देकर इस संसार में भेजा होता है। इसलिए गुरू नानक देव जी का गुरू कोई मनुष्य या व्यक्ति नहीं था बल्कि वह अकालपुरख स्वयं गुरू नानक साहिब का गुरू था। गुरू नानक साहिब का अपना कथन है।

अपरंपर पारब्रहमु परमेसरु, नानक गुरू मिलिआ सोई जीउ ॥
(सोरठि महला १, पृ. 511)

4. शब्द गुरु का सिद्धान्त

आजकल बहुत से दंभी तथा पाखन्डी गुरु इस बात का प्रचार कर रहे हैं कि देहधारी गुरू के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। वह गुरबाणी में से मनभावन पंक्तियां जिनमें "गुरु" शब्द आता है, के अर्थ देहधारी गुरु करके सिख संगत को धोखे में डालने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु यदि गुरबाणी के अर्थों को यथार्थ तौर पर समझने की कोशिश की जाये तो पता चलेगा कि गुरबाणी में देह को कहीं भी गुरू नहीं कहा गया है। देह तो प्रकृति के क्षण-भंगुर नाशवान तत्वों से बनी हुई है। वह गुरु कैसे हो सकती है। गुरु तो ब्रहम शब्द है जो गुरु शब्द के द्वारा हमारी समझ में पड़ा है। उसे शब्द गुरुबाणी कहा गया है। गुरु जी कहते हैं :

जिन सबदि गुरु सुणि मंनिआ
तिन मनि धिआइआ हरि सोइ ॥
अनदिनु भगती रतिआ,
मनु तनु निरमलु होइ ॥ (सिरी राग महला महला 3)

बहुत स्पष्ट शब्दों में गुरबाणी शब्द को गुरू बता रही है और देह को मिट्टी।

कबीर धूरि सकेलि कै पुरीआ बांधी देह ॥
दिवस चारि को पेखना अंति खेह की खेह ॥

श्री गुरु नानक देव जी को अचल बटाले में जब सिद्धों ने पूछा कि उनका गुरु कौन है ?

कवणु मूलु कवणु मत वेला ॥
तेरा कवणु गुरु जिसका तूं चेला ॥
कवणु कथा ले रहहु निराले ॥

तो गुरु जी का उत्तर था।

बोले नानक सुणो तुम बाले ॥
ऐस कथा का देहि बीचार ॥
भवजलु सबद लंघावण हारु ॥
पवन अरंभ सतिगुर मति वेला ॥
सबद गुरू सुरति धुनि चेला ॥
अकथ कथा ले रहउ निराला ॥
नानक जुगि जुगि गुर गोपाला ॥ (रामकली महला १, पृ. 943)

भाव : सिद्ध प्रश्न करते हैं कि—मूल क्या है ? कौन सी शिक्षा लेने का समय है। तूं किस गुरु का चेला है ? तूं कौन सी बात से निर्लिप्त रहता है ? हमें इस बात को विचार बताओ कि संसार रुपी इस समुद्र को किस प्रकार पार किया जा सकता है ?

श्री गुरू नानक देव जी ने उत्तर देते हुए कहा : "प्राण ही अस्तित्व का मूल हैं। यह मानव जन्म का जो अवसर मिला है, सतगुरु की शिक्षा लेने का समय है। शब्द मेरा गुरु है। मेरी सुरति उसका चेला है। मैं अकथीनय गुरू के गुण गा-गा कर माया से निर्लिप्त रहता हूं। वह गुरु गोपाल हर समय मौजूद रहता है। केवल 'शब्द' द्वारा ही गुरु के गुणों का विचार किया जा सकता है। यह शब्द ही मनुष्य के अहं को दूर करता है।

गुरु नानक देव जी कहते हैं कि गुरू का शब्द ही मन को स्थिर अवस्था में रखने योग्य है। गुरु के शब्द के बिना मनुष्य बावला हो जाता है।

सब्द गुर पीरा गहिर गंभीरा. बिनु सबदै जगु बउरानं ॥
(सोरठि महला १, असटपदीआ पृ. 635)

गुरु ग्रंथ साहिब की सच्ची बाणी में से देह के मिथ्या (झूठ) होने तथा शब्द के गुरू होने की शिक्षा मिलती है। देह मरती है परन्तु गुरबाणी अमर है। बाणी "सतगुर जागता है देउ" का संदेश देती है। गुर शब्द, गुरबाणी, गुरबचन की कमाई द्वारा ही गुरमुखों का निजघर में वास हो जाता है।

सतिगुर का सचु सबदु कमावहु ॥
थिर घरि बैठे प्रभु अपना पावहु ॥ (आसा महला 5, पृ. 386)

सतगुरु नानक देव जी ने भाई लहणा जी को अपनी शब्द सत्ता द्वारा ही अपने जैसा गुरु बना कर गुरु ज्योति जगा दी थी। गुरू शब्द की ज्योति दस गुरु साहिबान के अन्दर एक ही थी परंतु शरीर भिन्न थे।

कई बार गुरबाणी में आये गुर मूरति पद से कई सज्जन टपला खा जाते हैं कि शायद यह 'मूरत' शब्द देह के लिए प्रयोग किया है, परंतु भाई गुरदास जी ने यह बताकर शंका निवृत कर है।

गुर मूरति गुर सबदि है साध संगत विच प्रगटी आइआ ॥
(वार 24-25)

—गुर मूरति पारब्रहम अबगत अबिनासी ॥
पारब्रहम गुरु सबदि है सतिसंग निवासी ॥
....

—सबद गुरू गुर जानीऐ गुरमुखि होइ सुरति धुनि चेला ॥
(वार 7-2)

गुरू अमर दास जी शब्द द्वारा ही प्रमात्मा की प्राप्ति को दर्शाते हैं :—

गुरसबदी हरि पाईऐ बिनु सबदै भरमि भुलाइ ॥
(सिरी रागु महला 3, पृ. 36)

गुरू रामदास जी कहते हैं कि गुरू के वचन गुरबाणी के शब्द ही संतगुरू हैं :

सतिगुर बचनु है नीका गुरबचनी अंमृत पावैगो ॥
(कानड़ा महला 4, पृ. 1390)

कई पाखंडी लोग यह धोखा देते हैं कि 'शब्द' उनके पास ही है, गुरबाणी में से नहीं मिलता। वे लोग मूल से ही भूले हुए हैं। 'शब्द' गुरबाणी से बाहर और कोई नहीं है। जिसने भी मन को समझाना है, वह गुरू की बाणी पढ़े, सुने इससे सब कुछ मिलता है। (पृ. 102)

गुर कै सबदि मन कउ समझावहि ॥
—सतिगुर की बाणी सति सति कर मानहु ॥
इउं आतम रामै लीना हे ॥

वास्तव में बात यह है कि सिख का मेल गुरु के संग शब्द द्वारा ही होता है। शब्द के द्वारा ही गुरु सच्ची राह बताता है। किसी की देही देखने से मुक्ति नहीं होती है। मुक्ति तो गुरु के उपदेश रूपी 'शब्द' को विचार करके उसे जीवन में डालने से ही होनी है।

सतिगुरु नो सभ को वेखदा जेता जगत संसारु ॥
डिठै मुकति न होवई जिचर सबदि न करे वीचारु ॥
(सलोक महला 3, पृ. 594)

गुर शब्द पर व्यावहारिक अमल करने पर नाम की प्राप्ति होती है।

जिन सबदि गुरू सुणि मंनिआ ॥
तिन मनि धिआइआ हरि सोइ ॥
(सिरी राग महला 3, पृ.27)

गुरू रामदास जी का फुरमान है :

बाणी गुरू, गुरू है बाणी विचि बाणी अंमृत सारे ॥
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै, परतखि गुरू निसतारे ॥
(नट महला 4, पृ. 982)

सिख का सतगुरू के संग मेल, गुरू शबद द्वारा ही हो सकता है। गुरू भी सिख को ब्रहम ज्ञान, शब्द द्वारा ही प्रदान करता है। गुरू नानक देव जी 'सिरी रागु' में कहते है :—

जब लगु सबदि न भेदीअै, किउ सोहै गुरदुआरि ।। (पृ. 19)

गुरू ग्रन्थ साहिब की बाणी इसलिए गुरू है क्योंकि यह प्रभु का अपना '**हुकमी शबद**' है जो सतगुरू साहिबान की आत्म-ज्योति ने प्रमात्मा में लीन होकर लिखी है।

गुर महि आपु समोइि सबदु वरताइिआ ।।
(वार मलार की महला १, पउड़ी, पृ.1279)

माया में फ़ंसे हुऐ जीवों की रचना बाणी का दर्जा नहीं रखती। दैवी बाणी ही '**शबद गुरू**' या '**गुर शबद**' है। जो पाखण्डो गुरू, गुरबाणी की नकल करके अपनी कच्ची-पिल्ली रचना रच कर गुरू बनने का दावा करते हैं, उनके प्रति गुरबाणी में फुर्मान है :

सतिगुर की बाणी सति सरुप है गुरबाणी बणीअै ।।
सतिगुर की रीसै होरि कचु पिचु बोलदे,
से कूड़िआर कूड़े झड़ि पड़ीअै ।।
ओना अंदरि होर, मुखि होरि है,
बिखु माइिआ नो झखि मरदे कड़ीअै ।।
(वार गउड़ी महला 3, पृ. 308)

भाई गुरदास जी 'शब्द गुरु' के सिद्धांत को अपने कबित्त में इस प्रकार दर्शाते हैं :

जैसे फल से बिरख, बिरख से होत फल,
अद्‌भुति गति कछु कहनु न आवै जी।
जैसे बास बावन मैं, बावन है बास बिखै,
बिसम चरित्र कोऊ मरमु न पावै जी।
कासट मैं अगनि है, अगनि मैं कासट है,
अति असचरज है, कौतक कहावै जी ।।
सतिगुर मैं सबद, सब्द मैं सतिगुर है,
निरगण गिआन धिआन समझावै जी ।। (पृ. 534)

बाणी गुरू और गुरू बाणी रूप है। यह गुरमत का एक अति सूक्ष्म और ऊंचा सिद्धांत है जो हमें व्यक्तिवाद, व्यक्तिगत गुरूडम तथा कुटुंब पूजा से ऊंचा उठाकर अकाल पुरख तथा दस गुरू साहिबान के आत्मिक स्वरूप के संग जोड़ता है। भाई गुरदास जी ने उपरोक्त कबित द्वारा बहुत सुंदर उपमाएं देकर इस सिद्धांत का वर्णन इस प्रकार किया है :

"जिस प्रकार फल से वृक्ष तथा वृक्ष से फल होता है, यह आश्चर्यजनक रीति है, इसके बारे में कुछ कहना कठिन है। जिस प्रकार सुगन्धि चंदन में तथा चंदन सुगन्धि में है, यह आश्चर्यजनक तमाशा है, कोई इसका भेद नहीं पा सकता। जिस प्रकार लकड़ी में आग है और आग में लकड़ी है यह भी एक आश्चर्यजनक करिश्मा है। इसी प्रकार ही सतगुरू तथा **शबद** में कोई अन्तर नहीं है। सतगुरू में शबद का निवास है, और '**शबद**' में सतगुरू का, परन्तु इस बात की सूझ वाहिगुरू के ज्ञान में ध्यान जोड़ने से ही होती है।

5. दस गुरू-एक ज्योति

'**दस गुरू एक-ज्योति**' सिख धार्मिक परंपरा की मौलिक धारणा है। इससे पूर्व कि हम दस गुरू एक-ज्योति के कथन को स्पष्ट करें, **ज्योति** के अर्थों को जान लेना आवश्यक है।

पंजाबी में 'जोति' शब्द संस्कृत के 'ज्योति' शब्द का तत्भव रूप है जिसके मौलिक अर्थ रोशनी अथवा प्रकाश हैं। परंतु समय-समय पर इस शब्द के अर्थ का विस्तार होता रहा। गुरु ग्रंथ साहिब में 'जोति' अर्थात ज्योति शब्द का प्रयोग कई अर्थों में किया गया है। जैसे कि—

(i) प्रकाश या रोशनी के तौर पर :
न सूरज चंद न जोति अपारा ॥ (गूजरी महला १)

(ii) वाहिगुरू की शक्ति के रूप में।
सभ महि जोति, जोति है सोइ ॥ (धनासरी महला १)

(iii) आत्मिक प्रकाश या रूहानी प्रकाश के तौर पर :

प्रगटी ज़ोति मिटिआ अंधिआरा ॥ (प्रभाती कबीर जीउ)

'ज्योति' शब्द के उपरोक्त तीन अर्थों में से **'दस गुरु इक जोति'** वाले **'जोति'** का अर्थ प्रकाश नहीं हो सकता । दूसरा अर्थ है, वाहिगुरू की शक्ति । परन्तु वाहिगुरू तो सबके अंदर है । यहां 'दस गुरू इक जोति' कहने से यही तात्पर्य नहीं हो सकता क्योंकि वाहिगुरू की शक्ति तो सभी के अंदर है, केवल दस गुरू साहिबान में ही क्यों ? अतः यहां पर **'जोति'** अर्थात **'ज्योति'** का अर्थ आत्मिक प्रकाश या रूहानी प्रकाश ही है, और यहां रूहानी प्रकाश की सारे गुरू साहिबान में समानता बताने के लिए ही 'दस गुरू इक जोति' कहा गया है । यह 'रूहानी प्रकाश' की समानता ही सारे गुरू साहिबान में एकता का आधार बनती है ।

इस बात का उल्लेख करना अयोग्य नहीं होगा कि 'दस गुरू इक जोति' को वैदिक धर्म की अवतार परंपरा के अनुसार समझना बहुत बड़ी भूल होगी । इस अवतार परंपरा के अनुसार निरगुण वाहिगुरू दुनियां के दुख-हरण हेतु बार-बार मनुष्य के शरीर में अवतार धारण कर के आता है । सिख धर्म में इस अवतार परंपरा को नहीं माना गया है । गुरु नानक देव जी ने इस परंपरा के अधीन बार-बार अवतार धारण नहीं किया । निरगुण ब्रहम के माननीय स्वरुप धारण करने का तो गुरबाणी में स्थान-स्थान पर खण्डन किया गया है । गुरू अर्जुन पातशाह कहते हैं कि वह मुंह जल जाये जो यह कहता है कि प्रमात्मा योनियों में आता है ।

सो मुखु जलउ जितु कहहि ठाकुर जोनी ॥ (पृ. ॥1136॥)

गुरू नानक साहिब दैवी तथा रूहानी ज्ञान, ईश्वरीय प्रकाश द्वारा परिपूर्ण एक संपूर्ण व्यक्तित्व थे । यही रूहानी ज्ञान का प्रकाश **'जोति'** है जिसे दूसरे शब्दों में गुरु या गुरत्व या गुर ज्योति कहा जा सकता है । जब हम यह कहते हैं कि गुरु नानक देव जी ने अपनी ज्योति गुरु अंगद देव जी में प्रज्वल्लित रख दी तो इसका अर्थ यही है कि

जो रुहानी ज्ञान की '**ज्योति**' गुरु नानक देव जी में प्रज्वल्लित है, वही उन्होंने कृपा करके भाई लहणा जी में प्रज्वल्लित कर दी। गुरु नानक देव जी का '**गुरुत्व**' भाई लहणा जी में प्रकाशमान हो गया। तभी वे भाई लहणा से गुरु अंगद साहिब बने और गुरु अंगद साहिब से यहा ज्योति प्रकाश की प्रक्रिया आगे प्रचलित रही और दस शरीरों में समान रूप से विचरण करती रही।

यहां '**ज्योति**' का एक शरीर में से दूसरे शरीर में प्रवेश करने का भाव यह नहीं कि जो आवागमन के सिद्धांत में एक आत्मा (ज्योति) का दूसरे शरीर में प्रवेश माना गया हो। बल्कि यहां **ज्योति** के प्रवेश से भाव है — एक दीपक से दूसरे दीपक को जलाने का या चंदन से प्रकाश होने का, या पारस से पारस बन जाने का। यहां विशेष बात यह है कि नवीन ज्योति के प्रज्वल्लित होने पर भी प्रथम ज्योति का अस्तित्व समाप्त नहीं हो जाना। **"सहिटिका दितोसु जीवदै"** कहने का तात्पर्य यही है कि भाई लहणा जी में ज्योति प्रकाशमान हो जाने मे गुरु अंगद बन जाने से, गुरु नानक के बीच की ज्योति बझ नहीं गई, समाप्त नहीं हो गई।

"इक जोति" का समर्थन, सिख विद्वान भाई गुरदास जी इस प्रकार करते हैं :

गुर अंगद गुरु अंगु ते अंमृत बिरखु अंमृत फल फलिआ ॥
जोती जोति जगाइनु दीवे ते जिउ दीवा बलिआ ॥

(वार 24 पउड़ी 8)

इसी विचार की प्रौढ़ता वे और अधिक विस्तार से इस प्रकार करते हैं :

निरंकार नानक देउ निरंकारि आकार बणाइआ ॥
गुरु अंगद गुरु अंग ते गंगहु जाणु तरंग उठाइआ ॥
अमरदासु गुरु अंगदहु जोति सरूप चलतु वरताइआ ॥
गुरु अमरहु गुरु रामदासु अनहद नादहु सबद सुणाइआ ॥
रामदासहु अरजनु गुरु दरसनु दरपनि विचि दिखाइआ ॥
हरगोबिंद गुरु अरजनहु गुरु गोबिंद नाउ सदवाइआ ॥

गुर मूरति गुरसबद है साधसंगति विचि परगटी आइिआ ॥
पैरी पाइि सभ जगतु तराइिआ ॥25॥24॥

भाई गुरदास जी एक और स्थान पर कहते हैं कि **'गुरू ज्योति'** एक स्वरुप में से दूसरे स्वरुप में किस प्रकार प्रवेश करती थी।

सतिगुर नानक देउ गुरा गुर होइआ ॥
अंगद अलख अभेउ सहिज समोइिआ ॥
अमरहु अमर समेउ अलख अलोइिआ ॥
राम नाम अरिखेउ अंमृत चोइिआ ॥
गुर अरजन कर सेउ ढोअै ढोइिआ ॥
गुर हरगोबिंद अभेउ विलोइि विलोइिआ ॥ (वार 3 पउड़ी 4)

गुरु घर के हजूरी रागी सत्ता तथा बलवंड 'रामकली दी वार'' में बड़े जोरदार शब्दों से उपरोक्त विचार की प्रौढ़ता करते हैं और ''इक जोति'' की ऐकता को दृढ़ करते हैं :

जोति ओहा जुगति, साइि सहि काइिआ फेरि पलटीअै ॥
(पृ. 966)

भाव शारीरिक जामे ही बदलते रहे परंतु आध्यात्मिक प्रकाश की समानता एक समान रही। इसी प्रकार आगे कहा है :

जोति समाणी जोति माहि आपु आपै सेती मिकिओन ॥4॥

....

नानकु तू, लहणा तूहै, गुरु अमरु तू वीचारिआ ॥ (पृ. 967)

दस गुरू एक ज्योति के विचार की प्रौढ़ता गुरू साहिब ने स्वयं भी की है। ''गुरू'' पदवी एक ही शक्ति है। गुरु नानक ज्योति, दसों गुरु साहिबान में प्रकट हुई, जैसे अकालपुरख एक ही है वैसे **''गुरू ज्योति''** भी एक ही है।

हरि गुर मूरति ''एका वरतै'' नानक हरि गुर भाइिआ ॥
(मारू सोलहे महला १, पृ. 1043)

दसों गुरु स्वरूप, गुरु नानक देव जी की ज्योति हैं :

दीपक ते दीपकु परगासिआ, त्रिभवण जोति दिखाई ॥

(रामकली दखणी महला १, पृ. 907)

गुरू गोबिंद सिंघ जी के दरबारी कवी "**भाई नंद लाल सिंघ जी** ने बड़े सुंदर ढंग से **गुरु ज्योति** की ऐकता को दर्शाया है। आप जोति-बिगास नामक पंजाबी पुस्तक में लिखते हैं :

नानक सो अंगद गुर देवना,
सो अमर दास हरि सेवना ॥27॥
सो रामदास सो अरजना,
सो हरि गोबिंद हरि परसना ॥28॥
सो करता हरि राइ दातारनं,
सो हरि कृशन अगंम अपारनं ॥29॥
सो तेग बहादुर सति सरूपना,
सो गुरु गोबिंद सिंघ हरि का रूपना ॥30॥
सभ ऐको ऐको ऐकना,
कहीं भेद ना कछु भी पेखना ॥31॥

भाई साहिब अपनी पुस्तक जोति बिगास (फारसी) में उपरोक्त विचार को ही इस बयान करते हैं :

हमू नानक अस्तो, हमू अंगद अस्त,
हमू अमरदास अफजलो अमजद अस्त ॥23॥
नानक भी वही है और अंगद भी वही है,
कृपा तथा सम्मान आदर का मालिक अमरदास भी वही है।
हमू रामदासो हमू अरजुन अस्त,
हमू हरगोबिंद अकरमो अहिसन अस्त ॥24॥
वही राम दास और वही अरजुन है,
सबसे बड़ा और अच्छा हरगोबिंद भी वही है।
हमू अस्त हरि राइ करता गुरू,
बदू आश्कारा हमा पुश्तो रू ॥25॥
वही हरिराय कर्ता गुरू है, जिसको,
हर वस्तु के सीधे उल्टे का ज्ञान हो जाता है।

हमू हरिकृष्न आमदा सर-बुलंद,
अजो हासिल उमीदि हर मुहतमंद ।।26।।

वही अग्रणी हरिकिशन है,
जिससे हर हाजतमंद की मुराद पूरी होती है ।

हमू अस्त तेग़ि बहादर गुरु,
कि गोबिंद सिंघ आंमद अज़ नूरि ऊ ।।27।।

वही गुरु तेग बहादुर है,
जिसके नूर से गोबिद सिंघ प्रकट हुआ है ।

हमू गुरु गोबिंद सिंघ हमू नानक अस्त,
हमा शबदि ऊ जौहरो मानक अस्त ।।28।।

वही गुरु गोबिंद सिंघ है और वही नानक गुरू है,
उसके शब्द, जवाहारात और माणिक मोती हैं ।

गुरु साहिबान इतिहासिक व्यक्ति हैं । इसलिए इतिहासकारों का संदर्भ देना भी आवश्यक है ।

"मुहसन फानी" जो छटे गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय में हिन्दुस्तान आया था, लिखता है :

"सिखों का निश्चय है कि जब गुरु नानक जी ने देह का त्याग किया तो उनकी आत्मिक ज्योति गुरु अंगद देव जी में आ गयी । इसी प्रकार गुरु अंगद (देव) ने वही ज्योति तीसरे गुरु के शरीर में जगा दी । इसी प्रकार कड़ी चली आ रही है । सारे गुरु ही नानक स्वरूप हैं और वे अपने आपको नानक ही कहलवाते हैं ।—छटे गुरु हरि गोबिंद जी ने मुझे एक पत्र लिखा था, उस में उन्होंने अपने आप को "नानक" करके ही लिखा था ।"

इसी प्रकार पश्चिमी विद्वान जे. **डी. कनिंघम** अपनी पुस्तक **"दाँ हिस्टरी ऑफ दाँ सिखस"** में गुरु गोबिंद सिंघ जी की ज्योति का मालिक दर्शाता है । यह ज्योति गुरु नानक से गुरु गोबिंद सिंघ तक उसी प्रकार पहुंची जिस प्रकार एक लैंप अपनी ज्योति दूसरे लैंप को देता है ।

एक ज्योति की निरंतरता तथा सैद्धांन्तिक ऐकता के विकास के बारे में इतिहासकार **गोकल चंद नारंग** लिखते हैं कि—

"गुरु गोबिंद सिंघ और उनके कार्य उस उन्नति का परिणाम था जो आरंभ से होती आयी थी। जिस फसल ने गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय में फल दिया, उसकी बुवाई गुरु नानक जी ने की थी और आठों गुरुओं ने उसे सींचा था। जिस तलवार ने खालसे की शान फैलाई थी– यह ठीक है कि उसे तैयार गुरु गोबिंद सिंघ जी ने किया था, परंतु फौलाद गुरु नानक देव जी कमा कर दे गये थे।"

डा. टरम्प ने बहुत सुंदर ढग से लिखते हुए कहा है कि "यह भिन्न भेद करने की कोई आवश्यकता नहीं कि कौन सी बात कौन से गुरु ने कही। फलां बाबा नानक ने कही और फलां किसी और गुरु ने। सारे गुरुओं ने वही बात कहीं जो गुरु नानक साहिब ने कही थीं।"

"संभं" वाहिगुरु से जगी नानक निरकारी की ज्योति तो गुरु नानक निरकारी ने जगायी, वही ज्योति भाई लहणा जी में तथा अपना अंग बनाया गुरु अंगद दूसरी पातशाही को, और ज्योति के प्रवेश वाला यह सिलसिला जारी रहा, गुरु गोबिंद सिंघ जी तक। बारी बारी से एक गुरु या उन्ही दसों गुरु शरीरों में इनसानियत के विशेष गुण भरे तथा समूची कौम को मुकम्मल इनसानियत के ढांचे में ढालते गये।

जब दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने यह अनुभव कर लिया कि यह नव सृजित कौम अपने पैरों पर आप खड़े हो कर आगे बढ़ सकती है तो उन्होंने गुरिआई गुरु ग्रंथ-पंथ को दे दी अथवा गुरबाणी के सांचे में ढली, जीवन वाली कौम को सारी जिम्मेवारी सौंप दी। इस जिम्मेवारी के कार्य को सौंपने के लिए उन्होंने पांच प्यारों का चुनाव करके पहले अमृत प्रचार के कौतुक से आरंभ किया। सिख कौम में उन्होंने पांच प्रतिनिधियों का चुनाव किया। जब इस प्रकार पांच जान न्यौछावर करने वाले सिंघ छांटे गये तो उन्हें अमृतपान कराया गया और अमृतधारी जत्थे का नाम खालसा रखा गया। यह दृढ़ करने के लिए कि खालसा अब पूर्ण तौर पर स्वावलंबी हो गया है

और उस कार्य को जिसे गुरु नानक ने आरंभ किया था और जिस कार्य को पहले नानक के पश्चात नौ अन्य नानक साहिबान चलाते आये थे, अच्छी तरह निभा सकता है, अथवा गुरु पदवी ले सकता है, गुरु गोबिंद सिंघ जी ने स्वयं उन पांच प्यारों से अमृतपान किया। संसार के धर्मों की उन्नति के इतिहास में यह एक बहुत अनोखी तथा अपने किस्म की विचित्र घटना थी कि गुरु, गुरु-चेले दोनों का पार्ट अदा करे। यह धार्मिक मण्डल में आत्मिक सोशिलजम था। इनसानियत को अभी तक अच्छी तरह महसूस नहीं किया गया और न ही भली प्रकार से प्रचारित किया गया है। प्रत्येक गुरु पैगंबर अवतार अपने चेलों पैरोकारों को अपने चेले तथा पैरोकार ही समझता है, अपने से नीचा तथा किसी निचली मंजिल पर खड़ा हुआ समझता है। परंतु जब गुरु गोबिंद सिंघ ने परख कर ली कि वे पांच सिंघ हर प्रकार से मुकम्मल हैं तो उनसे स्वयं अमृतपान करने से हिचके नहीं।

इस प्रकार दसवें गुरु साहिब ने उसी ज्योति का, जो कि अकाल पुरख से गुरु नानक देव जी के द्वारा उन्हें मिली थी, पांच प्यारों के द्वारा पंथ में प्रवेश कर दिया। इस प्रकार पंथ में गुरु का शरीर, विशेष रूप हो गया। "खालसा मेरो रूप है खास" कह कर सतगुरू साहिबान ने सिख को सम्बोधित किया। इस पंथ शरीर की रूह "धुर की बाणी" जो गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज है, थापी गयी। पंथ तब ही गुरू का विशेष रूप है यदि वह गुरबाणी की शिक्षाओं के अनुरूप चले, दस गुरू साहिबान के मार्ग-दर्शन व पदचिन्हों पर चले। यदि मनमत करे तो पंथ नहीं, खालसा नहीं, विशेष रूप नहीं बल्कि साधारण कुराही जनता है। गुरू जी का पूर्ण स्वरूप, खास रूप ग्रन्थ-पंथ अर्थात खालसा है। इस पंथ के पश्चात संगत है। पंथ समूह संगत की जत्थेबंदी का नाम है। स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संगत, तथा पंथक कार्यों के लिए पंथ अपने आप में से पांच प्यारों की नियुक्ति कर लेता है। ये पांच प्यारे गुरमत अनुसार फ़ैसले लेने के लिए संगत तथा पंथक कार्यों के लिए सक्षम होते हैं, अधिकार प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार संगत गुरू रूप होती है। यह ही सारा अमल जो गुरू नानक जी के द्वारा अकालपुरख से चला और नौ गुरू साहिबान की घड़ी हुई टकसाल के सांचे में पड़ कर खालसा पंथ की छाप का सिक्का

ढल कर गुरु रूप हो गया। इस प्रकार वही "एका जोति" सारे दस गुरु साहिबान में विचरण करती है और सारे दस गुरु नानक रूप हैं और एक स्वरूप हैं।

जिन लोगों को "इक जोति" के निश्चय वाली बात समझ नहीं आई उन्होंने दस गुरु साहिबान के व्यवहारिक जीवन को दूसरे से भिन्न प्रतीत किया है। इसीलिए कइयों ने यह कहना शुरू कर दिया कि गुरू नानक की राह से गुरू हरगोबिन्द, गुरु गोबिन्द सिंघ जी की राह भिन्न थी। "इक जोति" की परम्परा को न समझने के कारण, गुरू साहिबान के जीवन को ऊपरी दृष्टि से देखने के कारण ही, उन लोगों को यह भिन्नता लगती है। ऐसा भ्रम "जादूनाथ सरकार" को भी हो गया जब उसने यह लिख दिया कि—"गुरू गोबिंद सिंघ ने सिखों की मानवीय शक्तियों को दूसरी ओर से हटा कर केवल एक विशेष राह पर डाल दिया। सिख सर्वगुण सम्पन्न न रहे। गुरू साहिब ने सिखों की परमार्थक एकता तथा धार्मिक संगठन को सांसारिक सफलता तथा राजनीतिक उन्नति का साधन बना लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि सिखों की सदियों से हो रही सदाचारक तथा आत्मिक उन्नति एकदम रुक गई और वे केवल सिपाही बन गये।"

इसी प्रकार ही गुरु हरिगोबिंद साहिब की नवीन नीति के वास्तविक कारणों को आंखों से ओझल करके उनके बारे में यह कहा जाता है कि वे अपनी पूर्व गुरू परम्परा से टूटकर एक भिन्न लकार पर चल पड़े थे और उन्होंने अपने धार्मिक तथा परमार्थक कर्तव्यों की ओर से ध्यान मोड़ लिया और एक स्थान पर टिक कर अगवाई करने के स्थान पर वे शिकार तथा युद्धों में व्यस्त रहने लगे। ऐसा महसूस होता है कि जैसे गुरू नानक देव जी का नाम रूपी शीतल स्रोत, फौजों की छावनी के मरुस्थल में जाकर बिल्कुल सूख गया हो।

इस प्रकार के किये गये प्रचार से हमारी धार्मिक एकता को खतरा है। इस विचार द्वारा जन-साधारण को गुमराह करके हमारे अंदर बटवारे डाले जा सकते हैं जैसे गुरु साहिब के अपने समय में भी ऐसे लोग उदासी, मीणे, धीरमलीए तथा रामराइये की शकल में अपने वास्तविक मूल से अलग हो कर अलग अलग शाखाएं बना बैठे थे।

यदि हम गुरू साहिबान के व्यवहारिक जीवन के कार्यों की पृष्ठ-भूमि में उस समय की बदलती सामाजिक परिस्थितियों को समझने का यत्न करें तो हमें गुरू हरिगोबिंद साहिब का शस्त्रधारी होना तथा गुरू गोबिंद सिंघ जी का खालसा सजा कर न्यारी रहित प्रदान करना आश्चर्यजनक तथा भिन्न नहीं लगेगा। यह भक्ति तथा शक्ति के सुमेल की लहर गुरु नानक के चलाए हुई उस क्रांतिकारी राह का ही विकास था जिसकी नीव गुरु नानक पातशाह ने स्वयं यह कह कर रखी थी :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिर धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पृ. 1413)

गुरु नानक साहिब द्वारा प्रचारित किया जा रहा धर्म पुराने मत-मतांतरों का खण्डन करता था। गुरु नानक का मत हिंदू मत के कर्म कांडों तथा ब्राह्मणवाद की जकड़ से लोगों को मुक्त करता था। जाति पाति, सुच्च, नफरत, ईर्ष्या तथा भेद—भाव खत्म करके "ऐक पिता ऐकस के हम बारिक" का संदेश दृढ़ करवाता था। जब ऐसे धर्म के प्रचार द्वारा लोगों में जागृति आ गई तो लोगों के सोचने का ढंग एक हो गया, रहन सहन का ढंग एक हो गया तो यह आवश्यक था कि उनके अंदर कुछ ऐसी समस्वरता उत्पन्न हो जाती जो औरों से भिन्न होती, न्यारी होती तभी यह समस्वरता बढ़ी तो ऐसे लोगों का जोड़ ठोस हो जाना स्वाभाविक था। परंतु समय की हकूमत इसे कैसे सहन कर सकती थी कि कोई दूसरी कौम उसके मुकाबले पर खड़ी हो।

ऐसा ही हुआ। गुरु नानक साहिब की चलाई हुई इस सत्य की लहर ने जब गुरु अरजुन साहिब के समय में पूर्णता की सीमाओं को छूना आरंभ कर दिया तो जहाँगीर ने इस सत्य की लहर को कुचल देने का निर्णय किया जिसके फलस्वरूप गुरू अर्जुन साहिब की शहादत हुई। अब यही समय था जब गुरु हरिगोबिंद साहिब ने इस "सच" की लहर को सुरजीत रखने के लिए भक्ति के साथ शक्ति का

जोड़ किया और शस्त्रधारी हो कर समय की हकूमत को सत्य की लहर को दबाने मे रोक दिया। कुछ समय तक तो हकूमत दबी रही और "सत्य" की लहर बढ़ती गयी परंतु "गुरु तेग बहादुर साहिब" को शहीद करके औरंगजेब ने फिर इस लहर को दबाने का असफल यत्न किया जिसके फलस्वरूप गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की सृजना करके ज़ालिम के अत्याचार के टाकरे के लिए सत्य धर्म की लहर को ज़िंदा रखने के लिए अपना आपा तथा सरबंस न्यौछावर कर दिया। ये थे उस समय के संक्षिप्त हालात, जिन कारणों से गुरु साहिबान को अपने भिन्न-भिन्न शारीरिक रूपों में बाहरमुखी कुछ भिन्नता वाले कार्य करने पड़े परंतु इन सारे कार्यों के मूल में लक्ष्य एक ही था कि "सत्य धर्म" की लहर जिंदा रह सके?

इस ध्येय की प्राप्ति हेतु ही सिख गुरु साहिबान ने **भक्ति** के साथ **शक्ति** को जोड़ा, शस्त्रधारी होना, किले बनाने, जंग युद्ध करने आदि के कार्यक्रम इसीलिए थे कि गुरु नानक का चलाया "अकालपुरखीय धर्म" चढ़दी कला (बुलंदी) में प्रचारित किया जा सके और कोई इस "**सरबत के भले**" वाले धर्म को प्रचारित करने में रोक न लगा सके।

जहां तक सैद्धांतिक निश्चय तथा अकीदों की बात है, वह सभी गुरुओं के एक ही थे। सभी ने "इका बाणी इक गुरु इको सबद वीचार" के आधार पर सिख धर्म का प्रचार किया।

गुरु नानक साहिब के आगमन के समय जो सर्वपक्षीय गिरावट आ चुकी थी उसके लिए आवश्यक था कि जनसाधारण को लंबे समय का प्रशिक्षण देकर उस में नैतिक गुण, शिष्टाचार तथा फौलादी आचरण पैदा करके सच्चे और निर्मल तथा संपूर्ण इनसानों की कौम पैदा की जाये। यह कार्य कोई थोड़े से समय का नहीं था बल्कि सदियों से आई हुई सर्वपक्षीय गिरावट को दूर करने के लिए बहुत अधिक समय की आवश्यकता थी। इसीलिए ही व्यावहारिक प्रशिक्षण की पूर्णता के लिए "गुरु जोत" ने दस भिन्न-भिन्न शरीरों में 239 वर्ष लगाकर सिख कौम को संपूर्णता प्रदान करके गुरु ग्रंथ की स्थापना करके अपने आपको खालसा में अभेद कर दिया। इसीलिए **सिख का गुरू, गुरू ग्रंथ और पंथ है। गुरु ग्रंथ-पंथ में ही "गुरु जोति"** तथा 'जुगत' विराजमान है।

6. देहधारी गुरुडम

निक्कल-कलई को सोना तथा लालड़ी को लाल बताकर बेचना असली सिक्के के स्थान पर नकली सिक्का बना देना, बहुत भारी ठगी है। इसी प्रकार सच्चे गुरु साहिबान (दस-गुरु साहिबान) की नकल करके नकली गुरू बन बैठना दम्भी गुरूडम है। ऐसे दम्भियों को कलगीधर पातशाह इस प्रकार प्रताड़ित करते हैं :—

काहे को डिंभ करे मन मूरख डिंभ करें अपनी पत ख्वै है ॥
काहे को लोग ठगे ठग लोगन लोक गयो परलोक गवै है ॥
दीन दियाल की ठऊर जहां, तिह ठउर बिखै तुहि ठउर न अै है ॥
चेत रे चेत अचेत महां जड़, भेख के कीने अलेख न पै है ॥

गुरूदेव कहते हैं कि ऐ मूर्खो! पाखण्ड कर करके क्यों महात्मा बन-बन कर दिखावा करते हो ? इन ठगियों तथा पाखण्डों से तो तुम अपनी लाज वह इज्जत ही गंवा रहे हो। क्या तुम ने दुनिया को ठगने तथा धोखा देने की सौगन्ध खा रखी है ? यकीन मानो दुनिया को ठगने से न तो तुम, वर्तमान में और न ही भविष्य में, कोई ऊंचा आत्मिक पद या इज्जत ही प्राप्त कर सकोगे। दीन लोगों पर तरस करने वाला प्रभु जहां टिका हुआ है, उस सुन्दर मन्दिर में तुम्हें कोई इज्जत वाला, सम्मान वाला स्थान या पुजीशन नहीं मिल सकती।

ऐ मूर्ख! पाखण्डी तथा वेशधारी साधू! कुछ होश कर, कुछ होश कर! इन वेश और पाखण्डों के कारण तूं उस अपरंपार प्रभु को प्राप्त नहीं कर पाएगा।

दम्भी पुरूष अपना लोक और परलोक दोनों खराब कर लेते हैं। क्योंकि—

"उघरि गएआ जैसा खोटा ढबुआ
नदरि सराफा आइआ ॥ (आसा महला 5, पृ. 38)

पारखू लोगों के सम्मुख दम्भियों की पोल खुल जाती है। जैसे भाई मक्खण शाह ने बकाले में दम्भी गुरु बनी बैठी टोली की पोल

खोली। भाई गुरदास जी ऐसे दम्भी गुरूओं के बारे में कहते हैं, ये चाहे कितने भी छल कपट क्यों न करें, ये अपनी करतूतों से शीघ्र ही पहचान लिए जाते हैं। यथा :—

गुछा होइि धृकोनूआ किंउ वुड़ीअै दाखं।
अकं केरी खखड़ी कोई अंबु ना आखं।
गहणे जिउ जरपोस दे नही सोइिन साखं।
फटक न पुजनि हीरिआ ओइि भरे बिआखं।
धउले दिसनि छाहि दुधु सादहु गुण गाखं।
तिउ साध असाध परखीअनि करतूतति सुभाखं ॥7॥

(भाई गुरदास जी, वार 37, पउड़ी 7)

वुड़ीऐ—कहें। जरपोस—मुखौटा। फटक—कांच, बिलौरो। बिआखे—बहुमूल्य। गाखं—निर्णय होते हैं। सुभाखं—बोलने से।

धिकोने का कड़वा गुच्छा दाख (मेवा) का गुच्छा नहीं कहा जा सकता। (नीम की भांति ही धिकोने का पेड़ होता है। नीम पर छोटी छोटी निमोलियां लगती हैं, परन्तु नीम जैसे इस धिकोने के पेड़ पर बेर के समान गुच्छे लगते हैं)।

ऑक के साथ जो आम की भांति एक व्यर्थ का फल (डोडा) लगता है, जो चाहे देखने में आम के रंग रूप वाला होता है परंतु उसे कोई आम नहीं कहता। पालिश हुए गहने चाहे कितने ही चमकदार क्यों न हों परतु उन्हें सोने के गहने नहीं कहा जा सकता। बिलौरे (कांच) चाहे कितना ही चमकदार क्यों न हो, हीरों का मुकाबला नहीं कर सकता क्योंकि हीरे अमूल्य होते हैं। लस्सी और दूध रूपी रंग होने के कारण दोनों उज्जवल सफेद होते हैं परंतु स्वाद से उनके गुणों का निर्णय हो जाता है। इसी प्रकार साधु तथा असाधु दोनों करतूत और बोली से परखे जाते हैं। उनका लंबा चोगा, गोल पगड़ी, पैरों में खड़ांव इस बात का प्रमाण नहीं कि ये साधु हैं। यह तो साधु की करतूत ही बताती है कि वह क्या है ?

नकली गुरूओं की भरमार तथा दिखावा इतना चमक दमक वाला है और जनता इतनी भोली है कि नित्य प्रति इनके चंगुल में फंसती चली जा रही है। जब एक नकली गुरू की दुकान चल पड़ती

है तो "मक्कारी" से, दुनियां को लूट कर "शक्कर" से रोटी खाने के लिए अन्य चतुर, दंभी स्वार्थी तथा अधर्मी लोगों के मुंह में भी पानी भर आता है। इन दंभी गुरूओं के लिए सच्चा गुरु बनने के लिए कोई परीक्षा का पर्चा तो है नहीं जो इनको उत्तीर्ण करना आवश्यक हो।

अतः दूध पीने वाले मजनू जनता की पीड़ा-हरण हेतु, धर्म सच्चाई तथा नेकी की खातिर गर्म लोह पर बैठने, शीश बलिदान करने, सरबंस न्यौछावर करने, लोहे से लोहा लेने, आरों से चिर जाने तथा बोटी-बोटी कटवाने आदि की परीक्षा में पड़ने से तो दूर रहे। न्याय की बात तो यह है कि यदि इन नकली गुरूओं ने जगत गुरू नानक देव जी के स्वरूप होने, बल्कि उन्हें पीछे छोड़कर अपने आप को उनसे भी ऊंचा होने का दावा करना है और इस बात का दम भरना है तो उनकी ज्योति तथा जुगती वाले गुरू साहिबान की भांति अधर्म तथा धक्के के टकराव के लिए सामने आयें। परंतु यह तो स्वयं अधर्म तथा बेइनसाफी फैला रहे हैं। ये पाखण्डी तथा दूध पीने वाले मजनू, अपनी प्रभुता तथा एश्वर्यता में, सम्मान गौरव तथा अहं के दीर्घ रोग की नींद में मस्त हैं। सिख सतगुरू साहिबान का जीवन तो तड़प, कुरबानी तथा बेकरारी का जीवन था जब कि इन दंभियों का ध्येय तो अपने चेलों के द्वारा अपने श्रद्धालुओं से माया, एश्वर्य की वस्तुओं से आनन्द मनाना तथा ऐश बहार करना है। दसम पातशाह ने ऐसे दंभियों का नक्शा अपने इस सवैये में खींचा है।

जो करि सेव मसंदन की, कहै आन प्रसादि सभै मोहि दीजै ॥
जो किछु माल तवालिय में सो अब ही उठि भेट हमारी ही कीजै ॥
मेरो ही धिआन धरो निस बासर भूल के और को नाम न लीजै ॥
दीने को नामु सुने भजि रातहि, लीने बिना नहि नैक प्रसीजै ॥29॥

संसार में दंभी गुरु बनने की बीमारी पुरानी है। सतगुरु नानक देव जी के प्रकट होने से पूर्व संसार की धार्मिक दशा पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि उस समय अधिकतर दंभी साधु संत ही

अपने आप को गरू कहलवाने वाले थे। ऐसे दंभियों के पीछे लगकर लोग क्या करते थे, इसका पता नीचे लिखे गुरू वाक से लगता है :

पंअर ताप गेरी के बसत्रा ॥ अपदा का मारिआ गृह ते नसता ॥
देस छोडि परदेसहि धाइआ ॥ पंच चंडाल नाले लै आइआ ॥4॥
कान फराइ हिराणे टूका ॥ धरि धरि माँगै त्रिपतावन ते चूका ॥
बनिता छोडि बद नदरि पर नारी ॥
वेस न पाइऔ महा दुखिआरी ॥5॥
बोलै नाही होइ बैठा मोनी ॥
अंतरि कलप भवाईऔ जोनी ॥
अंन ते रहता दुखु देही साता ॥
हुकमु न बूझै हलआपिआ ममता ॥6॥
बिनु सतिगुर किनै न पाई परमगते ॥
पूछहु सगल बेद सिम्रिते ॥
मनमुख करम करै अजाई ॥
जिउ बालू धर ठउर न ठाई ॥7॥
जिस नो भए गोबिंद दइआला ॥
गुर का बचन तिनि बाधिओ पाला ॥
कोटि मधे "कोई संतु" दिखाइआ ॥
नानक तिन कै संगि बाधिओ पाला ॥

(प्रभाती महला 5, पृ. 1348)

दंभी गुरूओं के बहुत से टोले थे। वे अंधे गुरू होने के कारण लोगों को पार लगाने के स्थान पर डुबो रहे थे। भाई गुरदास जी ने उस हालत का नक्शा इस प्रकार खींचा है :

जती सती चिरु जीवणे साधिक सिध नाथ "गुरु" चेले।
देवी देव रिखीसरचरां भैरउ खेत्रपालि बहु मेले।
गण गंधरब अपच्छरां किनर जख चलिति बहु खेले।
राकसि दानो दैत लख अंदरि दूजा भाउ दुहेले।
हउमै अंदरि सभि को डुबे "गुरू सणे बहु चेले"।
गुरमुखि कोइ ना दिसई ढूंडे तीरथि जात्री मेले।
डिठे हिंदू तुरकि सभि पीर पैकंपर कउमि कतेले।
अंधी अंधे खूहे ठेले ।26।   (वार १, भाई गुरदास जी ।)

परंतु जब सतगुरू नानक देव जी ईश्वरीय ज्ञान की दैवी देन "रूहानी ज्योति" लेकर इस संसार में प्रकट हुए तो दंभी गुरु इस प्रकार से अलोप हो गये जैसे कि सूर्य चढ़ने से अंधेरा समाप्त हो जाता है और तारे छिप जाते हैं।

गुरू नानक साहिब ने लोगों को सत्य धर्म दृढ़ करवाया। और जब ज्योति में विलीन हुए तो अपने इक सिख, भाई लहणा जी को, गुरगद्दो की ईश्वरीय देन सौंप दी। परंतु कुछ लोगों ने जो गुरगद्दी की महानता को समझने में असमर्थ थे, बाबा श्री चंद तथा बाबा लखमी चंद जी को, गुरू अंगद साहिब के टाकरे पर गुरू बनाने का असफल यत्न किया। बाबा श्री चंद जी सिर में राख डालकर "उदासी" संप्रदाय के बानी बन गये। इसी प्रकार जब गुरू अंगद देव जी ने अपने "सिख" गुरु अमरदास जी को गुरगद्दी सौंपी तो आप के सपुत्रों बाबा दातू जी तथा दासू जी को गुरू घर के विरूद्ध उकसाया गया और दातू जी को गुरू बनाने का यत्न किया जो सफल न हो सकता। जब गुरिआई गुरू अमरदास जी ने भाई जेठा जी को दे कर "गुरू रामदास साहिब" बना दिया तो बाबा मोहन जी तथा मोहरी जी अड़ बैठे। जब गुरिआई गुरू रामदास जी ने गुरू अर्जुन देव जी को दी तो पृथी चंद तथा महांदेव ने गुरू अर्जुन देव जी का विरोध किया। अपने आप को गुरू दर्शा कर कई तरीकों से गुरू बनने का पृथी चंद ने प्रयास किया परंतु सफलता कहां से मिलती? पृथी चंद ने पंचम पातशाह जी के विरूद्ध मुगलशाही से मिलकर कई साजिशें कीं। यही कारण था कि "मीणे" सिखी से खारिज करके तनखाहीये करार किये गये। भाई गुरदास जी ने गुरू साहिब के समय "दंभी गुरू" बनने का यत्न करने वालों का अच्छी तरह पर्दा फाश किया :

बाल जती है सिरी चंद बाबाणा देहुरा बणाइआ,॥
लखमी दासहु धरम चंद पोता होइकै आप गणाइआ॥
मंजी दासु बहालिआ दातू सिधासणं सिखि आइआ,॥
मोहणु कमला होइउस चउबारा मोहरी मनाइआ,॥
मीण होआ पृथीआ करि करि टेढक बरलु चलाइआ॥
महा देउ अहंमेउ करि, करि बेमुखु कुता भउकाइआ॥
चंदन वासों न दास बोहाइआ॥33॥ (वार 29-33)

जब पंचम पातशाह ने गरू हरिगोबिंद जी को गुरगद्दी प्रदान की तो पृथी चंद की औलाद करतारपुरीए आदि सोढी गुरू घर के विरोधी हो कर समय की हकूमत के साथ मिल कर साजिशें करते रहे। बाबा धीरमल जिसको छटे गुरू जी ने दूसरा पृथीआ कह कर मीणा कहा था, उसने कुछ मसंदों को साथ जोड़ कर गुरू तेग बहादुर साहिब के समय तक दंभी गुरू बनने के लिए कई कपट व चालें चलीं परंतु कामयाबी नसीब न हुई। गुरू हरिराय साहिब ने गुरिआई गुरू हरिकिशन साहिब को सौंप दी थी, इसलिए बाबा रामराय बादशाह औरंगजेब का पिटठू बन कर गुरू घर का दोशी बन कर, मसँद पार्टी को साथ ले कर दंभी गुरू बना और अंत मसंदों के हाथों ही जिंदा जला दिया गया।

आजकल भी बेदी, त्रेहण, भल्ले, सोढी आदि अपने आप को गुरू अंश वंश बताकर अपने आप को गुरू सिद्ध करने का निरँथक प्रयास कर रहे हैं। ऐसे लोगों को यह याद रखना चाहिए कि ऐसी साजिशें गुरु साहिबान के समय से ही होती आयी हैं परंतु इन साजिशों के कर्ता को सदा मुंह की खानी पड़ती है।

दंभी गुरूओं को सदा यह याद रखना चाहिए कि गुरु घर से बेमुख होने पर यमों की मार सहन करनी पड़ेगी।

सतिगुर ते जो मुह फेरहि मथे तिन काले ॥
अनदिनु दुख कमावदे नित जोहे जम जाले ॥
सुपनै सुखु न देखनी बहु चिंता परजाले ॥
(सिरी रागु महला 3, पृ. 30)

7. डेरेदार गुरूडम महंत

'आखन भीतर तेल को डार,
सु लोगनि नीर बहाइ दिखावै ॥

सिख पंथ में कितने ही डेरेदार गुरुडम महंतों के अपने-अपने, अलग-अलग जत्थे बनते जा रहे हैं, जिन्हें सिख संप्रदायों के नाम पर निकाला जाता है। वास्तव में यह संप्रदायों का प्रचार है जो कि गुरू

पंथ की जत्थेबंदक एकता के लिए बहुत हानिकारक है। इन डेरों के संत-महंत अपने-अपने सेवकों को भांति-भांति के सिख बनाकर भ्रमित कर रहे हैं और उनके बलबूते ऐश करते हैं। यही कारण है कि दशमेश पातशाह द्वारा प्रदत्त खण्डे बाटे के अमृत वाली सिखी, जिसका ध्येय सभी संप्रदायों को समाप्त करना था, इन डेरेदार संतों-महंतों की कृपा द्वारा भिन्न-भिन्न संप्रदायों में बंटती चली जा रही है। कोई अपने आप को तीसरे पातशाह के सिख, **गंग दास** के नाम पर **गंगू शाहिये सिख** कहलवा रहे हैं तो कोई छटे गुरु जी के सिख, **भाई सुथरे शाह** के नाम पर **सुथरे शाही शाखा** कायम किये बैठे हैं।

एक और गददी **अड्डणशाही** सिखों की भी चल रही है और कोई **सेवा पंथी** कहलवाने में ही गर्व समझ रहे हैं। इसी प्रकार **'बहिलो या भगते के'** सिखों की भी अलग शाख है। यह ठीक है कि इन गद्दियों के संचालकों की ओर से सिखी के प्रचार हेतु काफी यत्न हुये परन्तु अब ये गद्दियां निश्चय ही अलग **गुरुडम** तथा डेरेदार महंतों का रूप धारण कर चुकी हैं।

कोई अपने आप को **'हीरा दासिये'** सिखों की शाख के साथ जोड़ जा रहा है जो **शरणदास 'उदासी'** का चेला था, और जिसका डेरा **'गण्डी पिण्ड'** (तरनतारन) है. और कोई अपने आपको **'गुलाबदासीये'** **सिख कहलवा कर** प्रसन्न हो रहा है।

'गह्रिर गंभीर' नाम की एक और चोट, अंबाला जिला में देखने में आई है जो गुरबाणी के प्रमाण निकालकर, अनजान सिखों को फंसा कर अपना **'गहर गंभीर'** मत चला रही है। इसी प्रकार सरसा में **'सच्चा सौदा'** नाम का गुरुडम जोर पकड़ रहा है जो **'धन्न धन्न सतगुर तेरा ही आसरा'** कह कर आम सिखों को भ्रमित कर रहा है। यह चोट **संत साजन भऐ 'सरसे'** वाली अनन्द साहिब की बाणी वाली तुक में आये **'सरसे'** पद का अर्थ सरसा शहर करके, संतों के सरसे में प्रकट होने का एलान कर रही है।

गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पांच सिंघ काशी में संस्कृत की विद्या प्राप्त करने के लिए भेजे थे, उन्हें **'निरमले'** कहा जाता था, पर अब निरमले सिखों ने भी अपनी अलग शाख बना रखी है। चाहे कई

सिखी का ही प्रचार कर रहे हैं परन्तु अधिकतर लंगोटी-धोती के ही प्रेमी नज़र आते हैं। अपना निर्मल पंथ मान कर, डेरेदार संत बनकर अलग-अलग चेले चाटड़ रखते हैं, जो संप्रदायवन्दी को पक्की निशानी है। सिख धर्म में प्रवेश करने पर भी हिन्दू रीति-रिवाजों का चलन, अधिकतर इन्हीं की कृपा से हुआ है।

निहंग सिंघों की भी एक भिन्न शाखा बनी हुई है। ये अरदास दस गुरु साहिबान की ही करते हैं, पर अपना आरम्भ बाबा फूला सिंघ अकाली, भाई मान सिंघ, भाई नैणा सिंघ से मानते हैं। कई गुरु दशमेश जी के छोटे साहिजादे बाबा फतेह सिंघ से अपना आरम्भ मानते हैं। जत्थेदार को ये गुरु मानते हैं। भले ही ये गुरुडम के पक्ष-धर नहीं हैं, परन्तु अपना पथ अलग मानते हैं। बुडढा दल मुखी है। इन्हें चलता-फिरता पांचवां तख्त भी समझते हैं। चाहिए तो यह कि निहंग सिंघों की यह शाखा अपने भिन्न भेद मिटाकर अपने आप को गुरु पंथ का अंग समझे परन्तु ऐसा न होने के कारण ही सिखों की शक्ति कमजोर हो रही है।

इसी प्रकार कई संतों-महंतों की गुप्त गुरुडम महत पीढ़ियां हैं जो लोगों की अज्ञानता, भेड़चाल तथा मूर्खता के बलबूते चल रही हैं। जो कोई भी परिश्रम से डर कर हरामखोरी करने के लिए भष धारण कर लेता है वही देहधारी गुरु बन बैठता है।

कोई भगवान का ठेकेदार बन बैठा है। किसी ने स्वर्ण की चाबियां अपने हाथों में होने का दावा किया है। कोई रिद्धियों का मालिक बन बैठा है। किसी ने मट्ठ बना लिए हैं, किसी ने मंजी स्थापित कर ली हैं। कइयों ने औरतों को पुत्र देने का ढोंग रच रखा है। कइयों ने निशान साहिब पर मोर के पंख-टाँग कर भूत निकालने तथा प्रलोक के प्रश्नोत्तर की एजेंसी खोल रखी है। ऐसे लोगों की एजेण्ट अधिक-तर स्त्रियाँ ही होती हैं जो दूसरी स्त्रियों को फंसाने में शीघ्र काम-याब हो जाती हैं और जैसी कि कहावत है "स्त्रियों का गुरु कभी भूखा नहीं मरता" और इस प्रकार इनकी गुरुडम की दुकान चलती रहती है।

गुरुडम के ये दावेदार बहुत बार अपने डेरे में गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश भी कर लेते हैं ताकि भोले-भाले सिख श्रद्धावश इनके

चंगुल में शीघ्र फंस सके ।

कई दंभी गुरु संत महंत देखे गये हैं जो कि 'वाहिगुरु' आदि नाम लिखकर तावीजों में मढ़ कर या पानी में डालकर पीने को या धारण करने को कहते हैं। इस कर्म की भेंट वे सवा रुपये से लेकर सैंकड़ों रुपये तक ले लेते हैं। उम्र, कर्म का फल लड़के पैदा करने तथा छाया भूत-प्रेत की रोकथाम आदि बताकर अपनी दुकान चलाते हैं। गुरबाणी में ऐसे दंभियों के प्रति लिखा है :

ध्रिग तिना का जिविआ
जि लिख लिख वेचहि नाउं ॥
खेती जिन की उजड़ै, खलवाड़े किआ थाउं ॥
(वार सारंग महला १)

कई ऐसे भी देखे गए हैं जो स्त्रियों को अपनी चेलियाँ बनाने के लिए धागे-सूत आदि का कर्मकाण्ड करते हैं। गुरु जी ने इनके बारे में कहा है :

कामणिआरी कामण पाऐ, बहुरंगी गल तागा ॥
होछी मति, भइिआ मन होछा,
गुड़ सा मखी खाइिआ ॥
(वडहंस महला १)

मनमुख भरम भवै बेबाण, मूसै मंतर मसाण ॥
(महला रामकली)

अत: इन पाखण्डियों से मंत्र टोने टोटके तावीज आदि बनवा कर बाणी से बेमुख नहीं होना चाहिए। इनके पास लड़के पैदा करने की कोई मशीन नहीं होती। अनजान स्त्रियां इनके जाल में फंसकर बहुत खराब होती देखी गयी हैं। इन ठगों से लोगों को खबरदार करना चाहिए। ●

देहधारी गुरुडम की तीन प्रमुख गाद्दियाँ ।

(1) राधा स्वामी (2) नकली निरंकारी (3) नामधारी (कूका गुरूडम)।

8. राधा स्वामी गुरूडम

राधा स्वामी गुरुडम के बानी श्री शिव दयाल सिंह आगरा के क्षत्रीय थे। ये आगरा में सतसंग किया करते थे। इनके श्रद्धालु आपको '**स्वामी**' की पदवी से संबोधित किया करते थे। आपकी स्त्री का नाम राधा था। श्री शिव दयाल के उत्तराधिकारियों **ने राधा स्वामी गुरुडम** चला लिया।

इस मत में देहधारी गुरू की पूजा शब्द-सुरति का मनोकल्पित अभ्यास, त्रिकुटी- सुन्न-गुफा तथा दसम-द्वार में सुरति चढ़ाकर अनहद शब्द सुनने तथा कल्पित राधा स्वामी-धाम तक पहुंचने की योग मत की भांति शिक्षा दी जाती है। गुरु की जूठ, जिसे ये '**प्रसादी**' कहते हैं, खाने को पुण्य-कर्म समझा जाता है। ये मास, शराब का प्रयोग तो नहीं करते परंतु हुक्का बीड़ी सिग्रेट जो सबसे खराब नशा है, से अपने श्रद्धालुओं को विवर्जित नहीं करते। क्योंकि ऐसा करने से बहुसंख्यक हिंदू इस मत से बागी हो सकते हैं। व्यक्ति पूजा तथा गुरुडम के कारण 100 वर्ष के समय में इस मत की कई गद्दियां तथा शाखाएं बन गई हैं। इस मत का एक केन्द्र आगरा में है। दूसरी शाखा ब्यास (पंजाब) में भी है।

सिख पल्टन में से **बाबा जैमल सिंघ** स्वामी **शिव दयाल** के संपर्क में आये जो बाद में **ब्यास** वाली गद्दी के मुखी बने। दूसरे, आगरा के एक डाकखाने के महकमे के कर्मचारी **राय बहादुर सालिगराम** आपके चेले बने। यही वास्तव में राधा स्वामी मत के चलाने वाले है।

राधा स्वामी नाम कोई ईश्वरवादी नाम नहीं है। न ही इसका अर्थ शब्द-सुरति से संबद्ध है। यह तो शिव दयाल सिंघ स्वामी की पत्नि 'राधा' के नाम पर चला हुआ मत है। इसके अर्थ तथा स्वरूप को बाद में व्यर्थ बदलने का प्रयास किया गया है। स्वामी शिव दयाल सिंह पहले गुरद्वारा माईथान, आगरा में गुरबाणी की कथा किया करते थे परंतु हुक्का, बीड़ी पीने की आदत के कारण इन्हें गुरद्वारा साहिब में से बाहर निकाल दिया गया था। आदत के बारे में इस मत की पुस्तक '**सार-बचन**' में इस प्रकार वर्णन है :

हुक्का भर के दासी लिआई ॥
राधा स्वामी ढिग बैठ पिलाई ॥

....

फिर भोजन कर बीड़ी खाई ॥
बाँटी बीड़ी कनहीआ भाई ॥ (सार बचन पृ. 779)

राधा स्वामियों की पुस्तक 'सार बचन' में एक बहुत बड़ी गलत ब्यानी की गई है। वह इस प्रकार है:

सतियुग, त्रेता, द्वापर बीता।
काहूं न जानी शब्द की रीता॥

भाव—पिछले समय में किसी को शब्द-मूरति के निज नाम का ज्ञान नहीं हुआ। आगे चलकर 'सार बचन' में लिखा है, **शब्द की तारीफ तो हरेक मत में है, मगर शब्द का भेद किसी मत की किताब में नहीं लिखा।**

यह राधा-स्वामियों की मद चाल है कि एक ओर गुरबाणी का **दुरुप्रयोग** करके अपना **गरुडम** चलाना और दूसरी ओर गुरबाणी की **सच्चाई** को जान-बूझकर प्रकट न करना, क्या इन्हें गुरु नानक साहिब के इन वाक्यों का पता नहीं—

(1) **सबद गुरु सुरत धुनि चेला ॥**

(2) **सबद गुर पीरा गहिर गंभीरा, बिन सबदै जगु बउरानं ॥**

जिस प्रकार कल्पित राधा स्वामी नाम पर यह मत चला है, इसी प्रकार जोग मत की नकल करके राधा स्वामी पंज नाम उनके टिकाने तथा अन्दर शब्द होने को मानते हैं। वे पाँच मार्ग इस प्रकार हैं।

(1) जोत निरंजन (2) ओंकार (3) ररंकार (4) सोहं (5) सतिनाम

राधा स्वामियों ने राधा स्वामी रूहानी यात्रा का नक्शा खींचा है जो दलील-रहित, हास्यास्पद तथा गपौड़ों से भरपूर है। इस यात्रा को तय करने के लिए पहले आलती-पालती आसन लगाना पड़ता है जिसके अनुसार पैरों के बल बैठना, उंगलियों से कान बंद कर लेने, दो उंगलियां बंद की हुई आँखों पर रख लेना। इस आसन के उपरांत

आँखों के मध्य में त्रिकुटी में सुरति को टिकाना तथा 'राधा स्वामी गुरु' के शरीर या फोटो का ध्यान करना और नाम रटन का मुख्य साधन है। यहाँ से 'सार बचन' के कथनानुसार रुहानी यात्रा का आरंभ होता है।

इस यात्रा में 'योजनों' की गिनती-मिनती किसी हिसाबी-किताबी व्यक्ति का काम है। क्योंकि कहीं लिखा है,—पहले रुह पांच अरब 75 करोड़ योजन ऊपर गई, फिर वह वापिस आ गई। केवल गधी-गेड़ में पड़ने वाली बात है, और वास्तविकता कुछ नहीं है।

रुहानी यात्रा की झांकियों के बिना राधा स्वामी जोग मत के बताये हुए छः चक्करों की भूल-भुलैयां में से भी सुरति को घुमाते हैं। इससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि किस प्रकार योग मत की नकल करके राधास्वामियों ने भोले-भाले लोगों को चक्कार में डालने का प्रयास किया गया है।

राधा स्वामी एक ओर तो मास तथा शराब से नफरत करते हैं और कहते हैं कि इनका प्रयोग करने वाले को ईश्वर किस प्रकार मिल सकता है परन्तु दूसरी ओर समश तबरेज़, मौलाना रूमी तथा हाफ़ज के हवाले अपनी पुस्तकों में देते हैं जो सारे मास खाते हैं। हाफिज तो घोर शराबी था।

ब्यास वाले बाबू सावण सिंह जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के शब्द एकत्र करके इस पुस्तक 'शब्द की महिमा के शब्द' प्रकाशित की थी उसमें सार बचन की गलत बातों तथा टिकानों को गुरबाणी से मिला कर बताने के लिए सुखमनी साहिब की अष्टपदी 'जिस वखर कउ लैन तूं आइिआ ॥ राम नाम संतन घर पाइिआ ॥ के साथ एक मन घड़ंत तुकबंदी दर्ज कर दी है :—

सपत लोक के ऊपर धावै ॥ अलख अरमि की जब गत पावै ॥
तिसके ऊपर संतन धाम ॥ दानक दास कीआ बिसराम ॥

ये तुकें गुरबाणी की नहीं हैं। ये मनोकल्पित हैं। इस प्रकार 'नानक' पद का प्रयोग करके, गुरबाणी में तोड़-मरोड़ करके, गुरबाणी

के अर्थों को बदलने की करतूत की गई है जो असहनीय है, और गुरबाणी का सरासर अपमान है। बाबा राम राय जी ने एक तुक को बिगाड़ा, गुरु हरि राय जी ने सदा के लिए उन्हें सिखी में से छेद दिया, निकाल दिया। परंतु राधा स्वामी अपनी मन-मर्जी से गुरबाणी में कई-कई तुकें मिलाये जाते हैं और तिसपर यह प्रचार कि हम गुरबाणी ही तो पढ़ते सुनाते हैं।

राधा स्वामी जो 'नाम' देते हैं उनको गुप्त, गुंझलदार तथा अलेबीदार बयान करते हैं कि किसी को बताना नहीं, परंतु सिखी में प्रमात्मा के नाम को गुप्त नहीं माना गया है। दसम पातशाह ने पाँच प्यारों को गुरमत का अधिकार देकर स्पष्ट कर दिया है कि नाम कोई गुप्त वस्तु नहीं है।

सिख सतगुरु साहिबान ने जूठ खाने की मनाही की है। परन्तु राधा स्वामी मत की पुस्तक में प्रसादी भाव जूठ खाने के बारे में स्पष्ट हिदायत है।

> कीआ चरनामित लाई प्रसादी ।। हार चढ़ा कर बंदगी साधी ।।
> ग्रास लीआ प्रसादी का जब ही ।।घट के परदे खुल गए तबही ।।
> ....
>
> पीक दान लै पीक करावे ।।
> फिर सब पीक आप पी जावे ।। (सारबचन पृ. 779)

यदि एक जूठा और खाने से, पीकदान की थूक पीने से और कुरली अर्थात मलीन चुल्ली पीने से ही कपाट खुलते हैं या कुलों का उद्धार हो सकता है तो फिर आलती-पालती आसन लगाने, त्रिकुटी तथा सुन्न गुफा में सुरति चढ़ाना तथा छः चक्कर बांध कर दशम द्वार में अनहद शब्द को सुनने की आवश्यकता क्या है?

राधा स्वामी सामयिक गुरु तथा असामयिक गुरू (वक्त गुरू तथा बेवक्त गुरू) भी मानते हैं। सारबचन में लिखा है :

> पिछलों की तज टेक तेरे भले की कहूं ।।
> वक्त गुरु को मान तेरे भले की कहूं

इस कथन के अनुसार यदि बीत चुकों का आसरा नहीं रखना है, वक्त गुरू को ही मानना है तो राधा स्वामियों के पिछले सारे गुरूओं की कोई महानता नहीं रहती, तो फिर आगरा में शिव दयाल सिंह की समाधि एक सौ साल से अधिक समय की बन रही है। बताओ मर चुके वक्त गुरु की समाधि बनाने पर उनकी पुस्तकें छापने का क्या लाभ यदि वक्त गुरु को मानना ही नहीं है।

यदि राधा स्वामियों से स्वामी शिवदयाल के वक्त गुरू का नाम पूछें तो कहते हैं :

"उन का गुरु नाद था। उन्होंने और किसी से उपदेश नहीं लिया।

इससे सिद्ध होता है कि वक्त गुरु की कोई आवश्यकता व महानता नहीं है। यदि शिव दयाल का गुरू 'नाद' हो सकता है तो बाकी लोगों का गुरू 'शब्द' क्यों नहीं हो सकता?

सार बचन (छोटो) में लिखा है :

"ग्रंथ गुरु नहीं हो सकता, वह तो जड़ है, खुद बोलता नहीं और उपदेश कर सकता है।

इसके उलट राधा स्वामी मत के दूसरे गुरु 'राम बहादुर सालिग राम, लिखते हैं।

"कुल मालिक का स्वरुप शब्द है। सतिनामु प्रारब्रह्म आत्मा-प्रमात्मा कुल जीव भी शब्द स्वरुप है। बिना शब्द की उपासना और कोई ध्यान निज घर में नहीं पहुंचा सकता। कुल जीवों को जो अपना उद्धार चाहते हैं, लाजमी है कि अन्तर्मन में 'शब्द गुरु' के चरणों में लगे।"

(प्रेम पत्र, पृ. 14, भाग 4, बचन 2)

ये राधास्वामिओं की परस्पर विरोधी बातें हैं जो लोटन कबूतर की भांति कलाबाजियां मारने के समान हैं। एक ओर कहते हैं कि शिव दयाल का गुरु 'नाद' था और दूसरी ओर कहते हैं, ग्रंथ गुरु नहीं हो सकता-जो शब्द तथा आत्मिक ज्ञान का संग्रह है। तीसरे स्थान पर—गुरु का डुगडुगी पीटते हैं। चौथे स्थान पर बेवक्त गुरुओं अर्थात मुर्दों की समाधियां बनाये जाते हैं। वास्तव में ये स्वयं भ्रांतियों में फसे हुऐ हैं कि गुरु कौन है?

व्यक्तिगत पूजा तथा गुरूडम के कारण राधा-स्वामियों में कई गद्दियां कायम हो गई हैं। उनमें पूजा भेंट तथा जायदाद के लिए बड़ी मुकदमेबाजी हुई है। दयाल बाग, स्वामी बाग़ तथा अलाहाबाद के गुरूओं के बीच 31 मुकदमे हो चुके हैं। यह मुकदमेबाजी लण्दन की प्रीवी कौंसिल तक गई है।

अन्त में एक बात बताना चाहते हैं कि राधा स्वामी नाम, आलती पालती आसन, सुन्न गुफा तथा राधा स्वामी धाम गोरखधंधा हैं। इसी प्रकार इनका गुरुडम भी एक झमेला है। ये कई प्रकार के गुरु हैं। श्री शिव दयाल को संत सतगुरु कुल मालिक, राधा स्वामी का अवतार मानते हैं। उसके पश्चात किसी को साधु गुरु किसी को गुर-मुख गुरु तथा जो मर गये हैं उन्हें बेवक्त गुरु कहते हैं।

राधा स्वामियों की जो ब्यास वाली गद्दी चल रही है यह बाबा जैमल सिंह ने चलाई थी। फौज से रिटायर होकर 1891 में ब्यास नदी के किनारे, गांव वड़ैच तथा बल सरां के समीप आकर टिके। बल सरां के सिखों ने बाबा जैमल सिंग को सिख साधु समझ कर गाँव की साझी जमीन में धर्मशाला बनाने के लिए 11 कनाल 16 मरले जमीन दी, जिसकी रजिस्टरी नम्बर 254, दिनांक 14 जून, 1897 को गुरु ग्रंथ साहिब के नाम हुई। उसमें लिखा है :

"गुरु ग्रंथ साहिब वाकिया धर्मशाला मुतंजिल बाइहतमांम जैमल सिंघ साधु जट।"

इंतकाल कीं तस्दीक में दर्ज है :

"भाई जैमल सिंघ को यह जमीन रहन (गहने) या बहन करने का हक हासिल नहीं है। आम धर्मसाला मुतल्लका रहेगी।"

बल सरां गाँव के जिन मुखियों ने यह जमीन गुरु ग्रंथ साहिब के नाम रजिस्ट्री की उनके नाम थे—लालू नंबरदार, महताब सिंघ, भान सिंघ, बूढ़ सिंघ, शेर सिंग तथा गुरदित्त सिंघ

बाबा जैमल सिंघ का 1903 में देहांत हो गया उनके स्थान पर बाबू सावण सिंघ जानशीन बने। 10 मई, 1905 के श्री गुरु ग्रंथ साहिब के नाम धर्मशाला की हुई रजिस्ट्री का इंतकाल नंबर 536 हुआ। उसमें दर्ज, है कि 'सावण सिंघ चेला जैमल सिंघ बराय मोहत-मित' डेरे वाला असली स्थान गुरु ग्रंथ साहिब के नाम हो रहा।

बाबू सावण सिंघ ने गुरबाणी के शब्द एकत्र करके 'गुरमत सिद्धांत' नाम की एक पोथी छपवाई जिसमें, कहीं कहीं जिंदा गुरु तथा गुरमत के उल्ट ही वाक्य दर्ज हैं। जैसा कि पृष्ठ 66 पर दर्ज है :

"ग्रंथ पोथियाँ हमें सत्य की स्पर्श नहीं दे सकते।" कितनी तर्क-हीन व परस्पर विरोधी बात लिखी है। एक ओर 'गुरमति सिद्धांत,' प्रेम पत्र' के "सार बचन' तथा और पोथियाँ छाप कर लोगों को देते हैं तो उनको कथा सुनाते हैं। यदि ग्रन्थों से सत्य की प्राप्ति नहीं हो सकती तो फिर उनके छापने तथा कथा करने का क्या लाभ है।

कई कहते हैं, राधा स्वामी तो संतसंग के समय गुरबाणी का ही प्रयोग करते हैं। यह याद रखने की आवश्यकता है कि राधा स्वामी गुरबाणी को गुरमत दर्शाने के लिए नहीं पढ़ते बल्कि अपने गुरूडम के प्रचार हेतु प्रयोग करते हैं। अनुभव तथा आत्मज्ञान सतगुरू साहिबान तथा भक्तों का वर्णन करके बाद में यह कहना कि हमें गुरु मानो, परस्पर विरोधी तथा हास्यास्पद बात है।

सन् 1947 को बाबू सावण सिंघ ने कई साथियों को कहा कि मेरे उत्तराधिकारी संत कृपाल सिंघ होंगे परन्तु वे नहीं बन सके। 1948 में बाबू जी का देहांत हो गया। बाब जी के पौत्र सरदार चरन सिंघ ने ब्यास वाले राधा स्वामियों के साथ सांठ-गांठ करके अपनी पार्टी बना ली—जाट तथा गैर जाट का झगड़ा खडा करके संत कृपाल सिंघ को छंट कर दिया। सरदार बहादुर जगत सिंघ को गुरु बनाया गया जिसने डेरे की सारी जायदाद अपने नाम इंतकाल करवाने की कोशिश की परन्तु वह हो न सकी। सन 1951 में उनका देहांत हो गया तब सरदार चरन सिंघ गुरु बन गये। उनके विरुद्ध सन् 1954 में गांव बल्ल सराँ के साध्र सिंघ, तेजा सिंघ दर्शन सिंघ तथा गुरदास मल ने सीनियर सत्र जज, अमृतसर की अदालत में एक केस दायर किया कि डेरा बाबा जैमल सिंघ की 11 कनाल 16 मरले की जमीन श्री गुरू ग्रंथ साहिब के नाम रजिस्ट्री है, वहां पुरातन मर्यादा कायम रखी जाय। 24 जून, 1954 ई. को सरदार चरन सिंघ ने जवाबी दावे में कहा :

"हम गुरू ग्रंथ साहिब को इष्ट नहीं मानते। यह स्थान हमारी निजी जायदाद है। गुरु ग्रन्थ साहिब की 'बीड़' उठा दी गई है।"

सरदार तेजा सिंघ तथा साधु सिंघ के केस का फैसला हाई कोर्ट में से उनके हक में हुआ।

1957 में सरदार चरन सिंघ ने 30 एकड़ जमीन का कानून लागू होने पर 'राधा स्वामी सत्संग ब्यास' सोसायटी बनाई और उसकी वीटों पावर अपने हाथ में रखी। सरदार चरन सिंघ कहते हैं कि मैं जायदाद का वाहिद मालिक हूं। वह बाबू सावण सिंघ की भांति सिखी स्वरूप में होने के कारण, भोले-भोले सिखों को गुरबाणी की आड़ में फंसाकर अपना गुरूडम चला रहे हैं।

डेरे का प्रबन्ध नवीन तथा सुधारे हुऐ तरीके का होने का कारण, चाय, रोटी आदि सस्ती उपलब्ध कराकर सेवादारों की भरमार द्वारा आये-गये पर प्रभाव डालकर लोगों के ईमान तथा धर्म से गिरने में कामयाब हो रहे हैं। दूसरी ओर हमारी मुखी जत्थेबंदियाँ सिख धर्म के प्रचार की ओर से उदासीन होकर राजनीति की गहरी खड्ड में गिर कर लोगों पर अपना गलत प्रभाव डाले जा रही हैं, जिसके कारण लोगों को सिख धर्म की सूझ न होने होने के कारण बने देहधारी गुरूडम के डेरों की बाहरमुखी चमक-दमक अपनी ओर आकर्षित करने में तेजी से सफल हो रही है। आवश्यकता है, समय को संभालने की। आओ सिखी की सच्चाई को प्रकट करके देहधारी गुरुडम की वास्तविकता से लोगों को परिचित करायें ताकि गुरबाणी चुराकर गुरु बनने वालों को समाप्त किया जा सके।

9. नकली-निरंकारी

"निरंकारी एक सिख सुधारक लहर थी जो 19 वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में आरंभ हुई। यह समय महाराजा रणजीत सिंघ का था। उस समय राज्य चाहे सिखों का ही था किन्तु सिख, रहित मर्यादा में इतने पक्के नहीं रहे थे और पुरातन सनातन धर्मी मर्यादाओं —देवी देवताओं की आराधना अष्टभुजी देवो, दुर्गा तथा भगवती की मूर्तियों की पूजा, श्री दरबार साहिब, अमृतसर, तरन तारन जैसे महान धर्म स्थानों की परिक्रमा में आ गयी थी। गुरबाणी का पाठ

अधिकतर संस्कृत के मंत्रों की भांति हो हो गया था। जन्म-मरण विवाह शादी के समय पंडित प्रधान हो गये थे। ऐसे समय पर गुर-बाणी, का प्रकाश करके अज्ञान का अंधेरा दूर करने के लिए बाबा दयाल जी ने गुरू नानक—गुरू गोबिंद सिंघ की शिक्षाओं के अनुरूप गुरमत का प्रचार करना आरंभ किया। चाहे ग्रंथियों, भाइयों, गुरू अंश साहिबजादों बेदियों, सोढियों तथा ब्राहमणों की ओर से आपका बहुत विरोध किया गया, परंतु आप अपनो धुनि में पक्के रहे और निर्भय हो कर प्रचार करते रहे। अन्त में आपकी लगन तथा सेवा फल लाई और विशुद्ध सिखी के प्रचार की लहर चल पड़ी।

परंतु आजकल जिस प्रकार शुद्ध घी के स्थान पर वनस्पति घी बिकता है, नकली केसर, कस्तूरी, मोती शिलाजीत आदि कई प्रकार की नकली वस्तुएं मारकीट में बिकतीं हैं, इसी प्रकार दिल्ली में एक नकली निरकारी मण्डल भी चला हुआ है, जिसका संस्थापक गाँव अधवाल, जिला कैंबलपुर, पश्चिमी पाकिस्तान का एक शराबी-कबाबी भाई बूठा सिंघ बताया जाता है। उसे घोर शराबी होने के कारण निरंकारी दरबार रावलपिंडी में से निकाल दिया गया था। उसने पेशावर जा कर सिंघों के घातक गुरबचन के बाप अवतार सिंघ के साथ नकली निरंकारी जुंडली बनाने की कोशिश की। अवतार सिंघ उन दिनों में पेशावर में डबलरोटी तथा कुलचे तैयार करने को दुकान करता था। पेशावर, रावलपिंडी तथा पोठोहार में गुरसिखी का बहुत प्रचार था। इसलिए वहां पर भाई बूटा सिंघ तथा अवतार सिंघ की कोई दाल न गल सकी। उनका गुरूडम, दंभ तथा पाखण्ड चल न सका। 1947 में भारत तथा पाकिस्तान का बटवारा हुआ। बूटा सिंघ उससे चार वर्ष पूर्व एक भयानक रोग से कोहमरी में मर गया। अवतार सिंघ रावलपिंडी तथा पोठोहार में मुस्लिम लीगियों की गड़बड़ तथा तबाही से डरता हुआ भाग कर दिल्ली आ गया। उसने पहाड़ गंज, दिल्ली में एक मकान किराये पर ले कर "रोटी खाइये शक्कर से, दुनियां लूटिये मक्कर से' का कहावत के अनुसार निरंकारी की आड़ में अपना गुरूडम तथा दंभ-पाखंड फैलाना शुरू कर दिया। क्योंकि हमारे देश में अभी काफी लोग अनपढ़ हैं, अक्ल के अन्धे तथा

गाँठ के पूरे भी मिल जाते हैं, इस लिए उसको कुछ माथा टेकने वाले चेले मिल गये, पूजा भेंट भी आने लगी। जो व्यक्ति डबल रोटी तथा कुलचों की दुकान द्वारा पिशौर तथा रावलपिंडी में मकान न बना सका, उसने दिल्ली में आ कर पूजा के धन द्वारा शानदार कोठी बना ली। गुरूडम की डुग्गी पीटने के लिए कुछ पेड ऐजंट तथा चेलियां नियुक्त कर लीं। निरंकार के झूठे दर्शन करवाने का नाटक, व्यक्तिगत पूजा तथा कुटुम्ब पूजा का स्टंट रचा लिया। वह सिनेमा नौटंकी के नाच गाने वालों की भांति सुनैहरी मुकुट तथा रेशमी कपड़े डालकर सिंहासन पर बैठ कर अपने आप को हजूर शहिनशाह तथा सच्चा पातशाह कहलवाने लग गया। उसने अवतार, राम, अल्ला तथा गॉड के तुल्य होने का झूठा दावा किया।

"अंधी अंधा कूआं ठहले" की कहावत के अनुसार अंध विश्वासी चेले चेलियों को आस पास बिठा कर वह उनसे गवाता था—"इहदीआं तलीआं विच रब्ब वसदा।"

जो निराकार श्री वाहिगुरू, शब्द, स्पर्श रूप, रस, गंध मन तथा बुद्धि से परे हैं, खण्ड ब्रह्मांड तथा सारे विश्व में व्यापक है, वह नकली निरंकारी की हथेलियों में कैसे फंस गया? इस बात का वह कोई उत्तर नहीं देता था। उसने माया-मोहिनियों का जाल तान कर लोगों को फंसाने का यत्न किया।

यहां पर उदाहरण मात्र के लिये यह बता देना चाहते हैं कि अवतार सिंघ ने एक घोर अपराध यह किया कि पंजाबी के एक टुक्कड़-बोच कवी से तुकबंदी करवा कर अपने नाम पर नकली "अवतार बाणी" छपवाई जिसमें पुत्रों, पत्नी, बहु तथा पिछलग्गुओं को संत दर्शा कर उनके नाम पर अपनी स्तुति करवाई।

खुदाई के झूठे दावे करने वाला, झूठ, जूठ तथा वाम मार्ग का प्रचारक अवतार सिंघ 17 सितम्बर, 1969 को दिल्ली में बुरी तरह मर गया। उस कालोनी में रहने वाले एक सिंघ ने बताया है कि अवतार सिंघ की लाश गल सड़ गयी। उसके पुत्र तथा साथियों को, शीघ्र ही उसे विद्युत दाहन यंत्र पर लेजा कर फूंकना पड़ा। बाप की

नकल कर उसका बेटा गुरबचन सिंघ अपने अ.पको सतगुरू, जगत का पालनहार तथा सृजनहार कहने लगा। उसके पेशेवर ऐजेंट तथा अंध विश्वासी चेले चेलियाँ निरंकार से मुंह मोड़कर आदमप्रस्ती करते हुए ये काव्य टप्पे गाया करते थे—

—गुरबचन गुरू है जगत दा, आपे है अवतार।
—आया गुरु बचन अवतार सारे जग दा पालणहार।
—साडा कर गया बेड़ा पार।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत में से राजा-रजवाड़ा लोगों का तो सफाया हो गया है। परंतु लोगों की पूजा के आसरे पर ऐश करने वाला गुरबचन मजहबी मजावर अपनी पत्नि कुलवंत कौर को चेले चाटड़ियों से "राजमाता" कहलवाता तथा अपनी पत्रिका में लिखवाता था। "बाप पर बेटा, तुखम पर घोड़ा" की कहावत के अनुसार यदि बाप राम, गाड तथा अल्लाह का सानी बनता था तो पुत्र श्री राम कृष्ण, जनक, आदम मूसा, ईसा तथा मुहम्मद का अपने आपको उत्तराधिकारी कहलवाता था। एक ही समय पर लोगों को बुद्धू बनाने तथा अपने अहं को चारा डालने के लिए हिन्दू अवतारों तथा इबरानो पैगंबरों के संग अपनी पूंछ जोड़ता था, जिनकी विचारधारा या कोई सिद्धांत आपस में मेल नहीं खाता। यह इशतिहारी हकीमों, फिल्मों तथा सर्कस-कंपनियों की भाँति अपने गुरुडम की झूठी इशतिहारबाजी करके सिनेमाओं में रीलें दिखा कर लागों को पाखण्ड जाल में फंसाता था। गुरबचन सिंघ भारत के धार्मिक विद्वानों के किसी सम्मिलन में किसी आध्यात्मिक विषय पर अच्छी तरह तकरीर नहीं था कर सकता और न ही इसकी कोई लोक सेवा या कुर्बानी ही थी। "झूठों झूठा चुतावल सौं, के अनुसार निरोल दंभ पाखण्ड, माया तथा मोहनियों के आसरे कई मूर्खों को अधिक मूर्ख बनाता था।

हमारे देश में जिस प्रकार भाड़े पर रोने धोने वाली "नयण" मिल जाती हैं, उसी प्रकार कई टुक्कड़ बोच कवी तथा लेखक झूठी स्तुति करने वाले भी मिल जाते हैं "गुरू जिन्हां दे टपणे चेले जाण छड़प्प" के कथनानुसार एक रिद कवी ने रसाला "संत निरंकारी"

मई 1964 के अंक में पृष्ठ 9 पर अवतार सिंघ की परले दर्जे की नीच स्तुति करते हुए एक कविता छपवाई। जिसमें रिंद कवी ने लिखा :

"अल्ला" आपे मुड़ आया जे।
"गाड वी नाल लिआइया जे।
इह रब्ब आपे है आया।

फरवरी, 1966 की "संत निरंकारी" पत्रिका में एक और अंध विश्वासी तथा टुक्कड़ बोच, एस. एस. आनंद ने लिखा है :

दुनियाँ वालिओ दसां मैं गल इको,
इहो बैठा जे दुनियां बणाउण वाला।
सदा ऐस ने कायम ते दायम रहणा,
बाकी जग ऐ आऊण ते जाण वाला।

झूठे खुदाई दावे करने वाला अवतार सिंघ 17 सितम्बर, 1969 को दिल्ली में कैंसर के रोग से मर गया। वह मरने के समय बहुत खराब हुआ। उसकी लाश से बदबू आती थी। इसलिए उसे जल्दी से विद्युत दाहन भट्ठी में जला दिया गया।

"रिंद" कवी या नकली निरंकारी यह बतायें कि क्या अवतार सिंघ के मरने से राम, अल्लाह तथा गाड मर गये या उसके साथ ही चले गये हैं ? जो राम उसकी झोली में बसता था क्या वह अवतार सिंघ के साथ ही बिजली की भट्ठी में फुंक गया है ? कदाचित नहीं। ये जिसे कायम मुकाम बताते हैं, वह कहां हैं ? जिसको अकालपुरख, राम, अल्ला तथा गाड कहा जाता है उसकी जाति सदैव कायम है। वह अजर-अमर शक्तिवान तथा "आदि सचु जुगादि सचु नानक होसी भी सचु" है। पर झूठे खुदाई दावे करने वाला एक दंभी, पाखण्डी, काम, क्रोध, ईर्ष्या तथा द्वेश का पुतला, जिसको जमीर-फरोश तथा आदमप्रस्त कवी रिंद, अल्ला गाड तथा राम ब्यान करता था, वह मर गया है।

यदि एस. एस. आनन्द कहीं पर है तो वह बताये कि जिस अवतार सिंघ को वह दुनियां बनाने वाला तथा कायम-दायम बताता था, वह इस समय कहां पर है ?

कहते हैं कि लंदन में एक वेश्या ने अपने घर के आगे महात्मा बुद्ध की मूर्ति लगा रखी थी। उसको किसी ने पूछा, '(ऐ पापिन बुद्ध तो बहुत नेक पुरूष थे, तूं दुराचारी हो कर उनकी मूर्ति अपने घर के ऊपर क्यों लगाये हुए है ?" उस वेश्या ने उत्तर दिया—"मैंने यह मूर्ति बौद्ध तथा हिन्दुस्तानियों को फंसाने के लिए रखी हुई है।"

ठीक यही हालत भाई अवतार सिंघ के पुत्र, पौत्र की है जो अपने गुरुडम तथा पाखंड जाल में भोले भाले लोगों को फंसाने के लिए "निरंकार" के नाम का प्रयोग करते हैं। न ये संत हैं, न निरंकारी, बल्कि एक मजहबी ठग हैं।

अफसोस की बात यह है कि सिंघ नाम रखवा कर, गुरु का रूप-दाहड़ी तथा केश रख कर, गुरबाणी के शब्द पढ़ कर लोगों को पोथियां दे कर ये निरंकारी नाम को बदनाम कर रहे हैं।

जिस प्रकार मकड़ी जाला तान कर माखियों तथा कीड़ियों को फंसाती है, और पानी में बगुला समाधी लगा कर एक टांग के बल पर खड़ा हुआ मेंडक तथा मछलियों की घात करता है, इसी प्रकार नकली निरंकार के दर्शन करवाने का एक छल नाटक रच कर कई भोले भाले लोगों को अपने गुरुडम के जाल में फंसाते हैं। जब कोई इनके जाल में फस जाये, उसको कहते हैं – निरंकार के दर्शन करने हैं ?

भोले भाले आदमी तथा बुढ़ियां कहती हैं—"हां, बाबा जी दर्शन करने हैं।"

नकली निरंकारी उस समय एक हाथ ऊपर तथा एक हाथ नीचे, बराबर रख कर कहते हैं—बीच में देखो !

भटके हुए श्रद्धालु दोनों हाथों के बीचों बीच देखते हैं। फिर छलिये कहते हैं—बस यही निरंकार है।

वास्तव में ये पाखंडी गुरु निरंकार से उतने ही दूर हैं, जितना कि शैतान नेकी से दूर है। दर्शन अपने ही करवाते हैं, पर धोखा निरंकार के नाम पर करते हैं।

झूठे दर्शनों के बारे में एक बयान :

सरदार दान सिंघ, भूतपूर्व सैक्रेटरी, गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी, दिल्ली तथा प्रोपराइटर नैशनल ट्रांसपोर्ट ने बताया—एक बार मैं

तथा सरदार रतन सिंघ ठेकेदार, करोल बाग, मैंबर, दिल्ली गुरद्वारा कमेटी, अवतार सिंघ को मिलने गये। हमने उस को कहा—सुना है कि आप, लोगों को निरंकार के दर्शन करवाते हो। हमें भी दर्शन करवा दो।

अवतार सिंघ कहने लगा—जितने समय में स्त्री-पुरुष भोग विलास करते हुए खारिज होते हैं, उतने समय में मैंने तुम्हें दर्शन करवा देने हैं।

हमें उसकी यह बेतुकी बात सुन कर बड़ा अफसोस हुआ। हमने दिल में सोचा कि जिस को भोग विलास के अतिरिक्त कुछ सूझता ही नहीं, उसने निरंकार के क्या दर्शन करवाने हैं। हम निराश होकर उठ कर आ गये।

"बिल्ली को छिछड़ों के स्वपन" के कथनानुसार जिस ने बेगानी कमाई में से रोज अच्छे पदार्थ, जी भर कर मास खाना है और स्काच व्हिसकी पीनी है, वह काम देव या शैतान के दर्शन तो करवा सकता है परंतु निरंकार के दर्शन न उस को स्वयं हो सकते हैं, न वह किसी को करवा सकता है।

हथेलियों में ईश्वर :

बिल्कुल विकारी गुरबचन सिंघ का एक चेला बिकर सिंघ (लुधियाना) कहता है—

"निरंकारी बाबा की हथेलियां हिलीं तो ईश्वर प्रत्यक्ष नजर आया, आवागमन से मुक्ति मिल गयी।" (संत निरंकारी अगस्त 1970, पृ. 32)।

जो निरंकार शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, मन बुद्धि तथा देश तथा काल की सीमाओं से परे है, वह बिल्कुल विकारी गुरबचन सिंघ की हथेलियों में नहीं हो सकता। इनका ईश्वर कोई बटेरा है, जो पाखंडी बाबा की हथेलियों में से फुर्र कर के उड़ा और वह बिकर सिंह को दिखाई दे गया।

यह शत प्रतिशत झूठ तथा फरेब है। यह गप्प है। यह शराबी कबाबी तथा अनपढ़ बूटा सिंघ तथा अवतार सिंघ के मोटे मगज़ का

आविष्कार है। गुरबचन सिंघ के जो चेले चाटड़े ढोलकियां बजा कर यह गाते हैं—

"इहदीयां तलीयां विच रब्ब वसदा" यह केवल एक टुक्कड़ बोच कवी की तुकबंदी है।

सारे महान ऋषियों मुनियों, संत महात्माओं तथा सुकरात आदि ने, फिलासफरों ने ईश्वर को हृदय में माना है। मन या मस्तिष्क में उसके गुणों का अपूर्ण ध्यान या तसव्वर क़ायम कर सकते हैं। लेकिन सर्व व्यापक शक्ति को हथेलियों में बताना मूर्खता तथा पाखंड का प्रदर्शन है।

हम नकलियों को पूछते हैं कि निरंकारी बाबा के सिर, मुंह, आंखों नाक कान तथा भुजाओं में ईश्वर क्यों नहीं था बसता ? वह संकुचित होकर हथेलियों में क्यों आ गया था ? बाबा के दूसरे अंगों ने क्या पाप किया था कि उनमें ईश्वर नहीं था बसता ?

नकली निरंकारी नाक, मुंह, दो आंखों, दो कान, दो नासिकाओं, गुदा आदि नौ द्वारे के स्थान पर सूर्य, चन्द्र, तारे ऊपर नीचे धरती पानी तथा अग्नि के बीच में आसमान हवा या शब्द को दो द्वार मानते हैं।

नकली निरंकारी गुरबाणी से कितने अनजान हैं, इसकी एक उदाहरण देता हूं। गुरू वाक् है :

सतिगुर बचन तुमारे ॥ निरगुण निसतारे ॥रहाउ॥
महा बिखादी दुसट अपवादी ते पुनीत संघारे ॥

नकली निरंकारियों की पत्रिका "संत निरंकारी, मई 1964 के पृष्ठ 7 पर, इसके अर्थ इस प्रकार दिये हैं :

"महां विखादी दुष्ट अपवाद' पांच तत्वों को कहते हैं। इनसान पाँचों तत्वों के मोह में फंस गया है।"
देख लो कितनी अज्ञानता है ?

गुरबाणी में "**महा बिखादी दुसट अपवादी**" पाँचों तत्वों को नहीं बल्कि पांच विषय विकारों—काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार को

कहा गया है। पाँचों तत्वों को पंज बिखादी बताना इनकी जहालत का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

जून, 1973 में लखनऊ में गुरबचन सिंघ की घर वाली राजमाता ने लैक्चर किया और कहा—

"कलयुग का बोहिथा मेरा पति है। वही तुम्हारी कल्याण कर सकता है। और कोई बाणी का पोथा तुम्हारा कुछ नहीं संवार सकता।"

इन्हें कोई पूछे कि यदि बाणी कुछ नहीं कर सकती तो फिर तुम अपने कुसतसंगों में बाणी के शब्द क्यों पढ़ते हो ? गुरबाणी की कथा (तोड़-मरोड़) कर क्यों करते हो ? जाली अवतार बाणी का पोथा क्यों लिखवाया है ? इन बातों का इनके पास कोई उत्तर नहीं है।

नकली निरकारिओं की चेलियां कई मर्दों के मुंह में जूठा भोजन इस अदा से डालती हैं जैसे सालियां जीजा को कौर भेंट करती हैं। और फिर वे स्वयं दूसरे मर्दों की जूठन खाती हैं। औरतों को जूठन खिलाने का मकसद एक ही है कि वह लिंग स्वतन्त्रता के अभ्यास में न झिकझिकायें। मास शराब, खूबसूरत औरतों के गुप्त व्यभिचार ही इनका एकाएक ध्येय हैं।

नकली निरंकारी सिख धर्म, गुरू ग्रन्थ साहिब तथा गुरधामों के विरुद्ध अति नीच शब्दों का प्रयोग करते हैं, इसलिए सिख पंथ में इस भ्रष्टाचार को फैलाने वाली जमात के विरुद्ध भारी गुस्सा है। ये लोग अपने कुसतसंगों में कहते रहे हैं कि "गुरू गोबिन्द सिंघ जो को भक्ति का क्या पता था, वह तो सारी उमर लड़ाइयां लड़ते रहे। सिख कौम इतनी पागल है कि स्थान-स्थान पर गुरद्वारे बना देती है जहां गुरुओं ने टिकाना किया या घोड़े बांधे या किल्ले गाड़े हैं। अमृतसर की कार सेवा नहीं बेकार सेवा थी। गुरू ग्रन्थ साहिब गुरु नहीं कागज़ों का थब्बा है, आदि, आदि।"

नकली निरंकारियों को कई बार सिखों का डेपूटेशन मिला कि यह बकवास बंद की जाय, परंतु सरकार की शह पर ये दिनो दिन आगे बढ़ते गये। अन्त में 1978 की बैसाखी वाले दिन अमृतसर में इन्होंने अपने कुसतसंग में सिख धर्म पर तीखे हमले किये। जब गुरु के सिख इन्हें

ऐसा करने से रोकने गये तो उन्होंने सिखों को गोलियों से भून डाला जिसके फलस्वरुप 13 सिंघ शहीद हो गये तथा 78 सिंघ जख्मी हो गये। 14 मई, 1978 को दिल्ली में सिख संगत ने अमृतसर के खूनी कांड के बारे में भारी जलूस निकाला। 26 सितम्बर, 1978 को कान-पुर में नकली निरंकारियों ने फिर अमृतसर का खूनी कांड दोहराया जिस में 8 सिंघों ने गुरु ग्रन्थ साहिब की आन तथा शान को बरकरार रखने के लिए शहीदी प्राप्त की। सरकार की शह पर नकली निरंका-रियों की उपरोक्त घटनाओं को नजर-अंदाज करके 4 से 6 नवम्बर 1978 को इंडिया गेट दिल्ली में सालाना समागम करने की सुविधा दी गयी तथा सुरक्षा के करडे प्रबंध किये गये। जिसके रोश में दिल्ली के सिघों ने 5 नवम्बर को शांतमई प्रोटैस्ट जलूस गुरद्वारा बंगला साहिब से आरंभ किया जिस पर पुलिस के अंधाधुंध अत्याचार के कारण तान सिंघ शहीद हो गये तथा असंख्य जख्मी हुए। सैंकड़े सिंघ ग्रिफतार करके जेलों में बंद कर दिये गये। सिंघों ने उपरोक्त शहीदी घटनाओं के द्वारा यह दृढ़ करवा दिया कि देहधारी गुरुडम की व्यभिचार फैलाने वाली इन गद्दियों से गुर शब्द को निंदा सहन नहीं की जायेगी।

इस संबंध में श्री अकालतख्त साहिब, अमृतसर से 10 जून 1978 को सिख कौम के नाम एक "हुकमनामा" भी जारी किया गया जिसके द्वारा सिखों को नकली निरंकारियों के साथ हर प्रकार का मेल जोल, सांसारिक संबंध तथा रोटी-बेटी के संबंध बंद करने का आदेश जारी किया गया।

नकली निरंकारियों का अग्रणी गुरबचन सिंघ उपरोक्त घटनाओं में सिखों को शहीद करने के पश्चात बगुला बनकर अहंकार में आ कर अपने पंख फैलाये बैठा था कि.........बैठा बगुला, ...केल करे किसी ने इस दुराचारी पाखण्डी, पापी को गोलियों का निशाना बना कर दोज़ख में भेज दिया। अब इसका पुत्र हरदेव सिंघ मोटर स्पेयर पार्ट की दुकान से पुर्जे बेचने का काम छोड़ कर नकली निरंकारियों की गुरुडम की झूठी दुकान को चलाने के लिए दंभी गुरु बन बैठा है। खालसा पंथ को सुचेत रह कर इस गुरुडम की दुकान का डटकर विरोध करने के लिए तत्पर रहना चाहिए ताकि यह झूठ की दुकान भोले भाले सिखों को गुमराह न कर सके।

10. नामधारी कूका गुरुडम

सिख धर्म में "गुरबाणी संगत बिना दूजी ओट नहीं है राई" का सर्वोच्च सिद्धांत श्री गुरू नानक देव जी से ले कर श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी, दसवीं पातशाही तक सवा दो सौ वर्ष तक एकरस जारी रहा है।

पहले नौ सतगुरु साहिबान किसी को भी सिखी में प्रवेश करवाते समय गुर मंत्र के साथ चरण पाहुल भी दिया करते थे। परतु जीवन-दाता महाबली तथा सरबंस दानी श्री दशमेश जी ने 1 बैसाख 1756 बिक्रमी को अनन्दपुर साहिब में पांच प्यारों का शीश भेंट ले कर उनको चरणामृत देने के स्थान पर खण्डे का अमृत मिला कर उन्हें **"खालसा मेरो रुप है खास"** होने का सम्मान प्रदान किया। फिर उन पांचों से स्वयं अमृतपान करके **"गुरु सिख गुरु है ऐको गुर उपदेश चलाऐ"** के महान आदर्श को संपूर्ण किया।

श्री दशमेश जी ने पांच प्यारों को अमृतपान करवाने, गुर मंत्र दीक्षा तथा सिख विधान तथा दंड का अधिकार दे कर व्यक्ति पूजा का अधिकार दे कर व्यक्तिगत गुरुता को पथ में से समाप्त कर दिया। पहले गुरू ज्योति, गुरु साहिबान व्यक्ति रूप में स्वयं गुरुमत्र तथा चरण पाहुल देते थे। दसम पातशाह ने उसको पांच में बदल दिया।

श्री दशमेश जी ने कार्तिक सुदी 5 संवत 1765 को सचखंड हजर साहिब (नादेड़) में जीवन यात्रा समाप्त करने के समय खालसा जी को संबोधित करते हुए वचन किया—

पूजा अकाल की, प्रचा शबद का, दीदार खालसा का।

आत्मा ग्रंथ में, शरीर पंथ में कह कर गुरुता जुगो जुग अटल साहिब श्री गुरू ग्रंथ साहिब तथा गुरु पंथ को सौंप दी और पंथ के वाली ज्योति में विलीन हो गये। गुरु ग्रंथ-पंथ को गुरुता मिलने के पश्चात खालसा पंथ में व्यक्तिगत गुरुता का प्रश्न ही नही उत्पन्न होता। जो व्यक्ति ग्याहरवां, बाहरवां गुरु मानता है, वह गुरमत का विरोधी है तथा मनमुख है और उसे सिखी से खारिज समझा जाना चाहिए।

दशमेश जी के ज्योति में विलीन होने के पश्चात अनेकों संप्रदाय अस्तित्व में आये परंतु किसी भी संप्रदाय ने यह नहीं माना कि गुरु, गोबिंद सिंघ जी ने किसी व्यक्ति को गुरूता देकर आगे ग्याहरवें, बाहरवें गुरु की कड़ी चलाई हो। और न ही किसी इतिहासकार ने इस बात का कहीं उल्लेख किया है। परन्तु सारी सप्रदाओं के पश्चात चली नामधारी या कूका संप्रदाय के लिखारियों—निधान सिंघ आलम तथा तथा इंदर सिंघ चक्रवर्ती ने बीसवीं सदी के पहले चरण में बाबा बालक सिंघ को गुरु बना कर कूका गुरूडम की डुगडुगी पीटने के लिए एक झूठी तथा बेसिरपैर कहानी बना ली है कि दशमेशजी ने हजूर साहिब में शरीर नहीं छोड़ा है बल्कि बाबा अजापाल सिंघ के रुप में नाभा में एक स्थान पर छिपे रहे। इस गुरुडम को कामयाब करने के लिए कूकों ने मनोकल्पित तथा झूठी तस्वीरें भी छपवाई हैं जिनमें यह प्रकट किया गया है कि दशमेश जी ने हज़रो, ज़िला कैंबलपुर में जाकर बाबा बालक सिंघ को गद्दी प्रदान की।

गुरुता कब दी ? किसके सामने दी ? इसका कूका लिखारियों के पास कोई प्रमाण नहीं है।

कूका लिखारी निधान सिंघ आलम ने 1932 में यह कल्पित कहानी "गुरु पद प्रकाश" में प्रकाशित की। उसका युक्तिपूर्वक उत्तर स्वर्गीय भाई सेवा सिंघ एडीटर, "खालसा समाचार" ने अपनी लेख माला तथा पुस्तक "गुरु पद निर्णय" में दिया। जिस पर बहस बंद हो गयी।

सन 1934 में बाबा प्रताप सिंघ नामधारी की ओर से भैणी राईयां जिला लुधियाना में एक सर्व सिख संप्रदाय कांफ्रेंस की गयी। उसमें सरदार जोगिंद्र सिंघ, मास्टर तारा सिंघ, ज्ञानी शेर सिंघ आदि मुखी शामिल थे। उस कांफ्रेंस में दस पातशाहियों की अरदास की गयी। लोगों ने समझा कि झगड़ा समाप्त हो गया है। परंतु जिस प्रकार तपेदिक तथा कई और रोग जाते नहीं, उसी प्रकार गुरूडम का वह रोग गया नहीं, फिर वही कल्पित तस्वीरें प्रदर्शित करने का चाव कूदा है।

कूकों ने तरन सिंघ वहमी द्वारा एक पुस्तक "नादेड़ तों बाद" "दसम गुर-दर्शन" लिखवाई है। उसमें पुरानी बातों तथा मिथ्यावाद को ही दोहराया गया है। बाबा बालक सिंघ को गुरुता देने की तथा झूठी सरकार की ओर से ज़प्त हो चुकी तस्वीर फिर दी गयी है, जो कि साहित्यक दुनियां के नियमों के विरुद्ध है।

अब तक कूके अंग्रेजी को मल्लौच्छ भाषा मान कर पढ़ने से इनकार करते रहे हैं। फरवरी 1971 में इन्होंने एक आर्य समाजी महाशय शिव लाल को भाड़े पर लेकर दिल्ली से छपने वाली अंग्रेजी की चार पृष्ठीय अखबार "इण्डियन प्रागरैस" जारी करवाई जिसमें कूका गुरुडम को सही सिद्ध करने के लिए उसके लिखारियों को गलत मनौतों तथा कल्पित कहानियों को नांदेड़ टू नाभा लेखमाला द्वारा अनुदित किया गया है।

हमारे देश में कई लिखारी ऐसे मिलते हैं, जिनका अपना कोई दीन इमान तथा आचरण नहीं है। उन्हें लालच देकर जो चाहो लिखवा लो। ऐसे लोगों को एक नीतिवान ने 'कलमी वेश्या' का नाम भी दिया है। उनमें से ही शिव लाल भी एक है।

शिव लाल के कूका गुरुडम को सिद्ध करने की यह लेखमाला 26 दिसम्बर 1971 को चंदे को कुछ रकम भेजो तथा (We need your financial aid) हमें आपकी आर्थिक सहायता की आवश्यकता हैं,' पर समाप्त हो गयी। इसके द्वारा लिखे गये लेखों को सिख लिखारियों-ज्ञानी प्रताप सिंघ जी, भूतपूर्व जत्थे-दार अकाल तख्त साहिब तथा संपादक ज्ञान अमृत, कैप्टन भाग सिंघ, संपादक, सिख रिव्यू (अंग्रेजी) कलकत्ता, डाक्टर गंडा सिंघ, डाक्टर तरलोचन सिंघ ने अपने जवाबी लेखों के द्वारा गलत साबित करके चेलेंज किया, जिसका शिव लाल तथा कूका लिखारियों से कोई उत्तर नहीं बन पाया।

सत्य कभी छिप नहीं सकता। झूठ पर सौ पर्दे डालो, वह अवश्य प्रकट हो जाता है। आकाश में कितने काले बादल छाये हों, सूर्य की एक झलक उन्हें छिन्न-भिन्न कर देती है। इसलिए गुरुडम के बारे में कूकों की मनघड़ंत कहानी उनके अपने परस्पर विरोधी लेखों द्वारा खण्डित हो जाती है और गलत साबत होती है।

विचार करने योग्य बात है कि दशमेश जी संवत 1765 के अनुसार 1708 ई में ज्योति में विलीन हो गये। उसके बाद 208 वर्ष तक किसी सिख या गैर सिख इतिहासकार ने यह नहीं लिखा कि दशमेश जी अजापाल सिंघ के रुप में नाभा में रहे और उन्होंने किसी को गद्दी दी है।

अजीब सी बात है कि कूके जिस अजापाल सिंघ को गुरू बताते हैं, उसके डेरे की यात्रा के लिए न बाबा बालक सिंघ और न बाबा राम सिंघ कभी गये थे, और न ही आज तक किसी कूके ने नाभा की ओर मुंह मोड़ा है।

जिस महाँबली निर्भय योद्धा सतगुरू ने 42 वर्ष तक गर्ज-गर्ज कर मुगल हकूमत के अत्याचार के विरूद्ध जेहाद किया, स्पष्ट तथा खुली लड़ाई लड़ी जिसने चमकौर की गढ़ी में से निकलने के समय ताली बजा कर, गर्ज कर कहा "हिन्द का पीर जा रहा है।" सब कुछ न्यौछावर करके औरंगजेब को दीने कांड़े से "ज़फरनामा" (विजय का पत्र) लिखा, उसने क्या डिप्लोमेसी का प्रयोग करना था ? यह कहना कि उन्होंने अपना, नाम तथा भेस बदल लिया और गुप्त रूप में रहे, यह दशमेश जी के शुभ आचरण के विपरीत है और मिथ्यावाद है।

श्री आलम तथा इंदर सिंघ ने एक और गलत ब्यानी की है। वह यह कि "भाई दया सिंघ आदि अग्रणी सिखों ने बाकी सिखों का भुलेखे में डाले रखा कि गुरू जी ज्योति में समा गये हैं या उनका अंतिम संस्कार हो गया है। नहीं तो सिख जरूर गुरू जी को ढूंढ निकालते या उनकी खोज करते।"

यह बात इसलिए गलत है कि श्री दसम पातशाह जी कार्तिक सुदी 5 संवत 1765 को नांदेड़ में ज्योति में विलीन हो गये थे। भाई दया सिंघ जी उनसे एक मास पहले 11 असु संवत 1765 बिक्रमी को शरीर त्याग गये थे।

श्री आलम तथा चक्रवर्ती से समय का भी पक्ष नहीं मिलता है। दसम पातशाह कार्तिक सुदी 5 संवत 1765 को नांदेड़ में ज्योति में विलीन हुए। बाबा अजापाल सिंघ संवत 1830 बिक्रमी में नाभा आये। कूके बतायें कि 65 वर्ष तक गुरू जी कहां छिपे रहे ?

इससे स्पष्ट है कि बाबा अजापाल सिंघ को श्री दशमेश जी बताने की झूठी कहानी कूकों ने अभी घड़ी है।

किसी शायर का कथन है :

"साज बिगड़ा हो तो आती है सदा बिगड़ी हुई।"

जिस व्यक्ति का मस्तिष्क दरुस्त न हो, उसकी बात दरुस्त नहीं होती. अब हम नामधारियों के मुखी बाबा बालक सिंघ के जीवन पर कुछ दृष्टिपात करते हैं।

बाबा बालक सिंघ :

बाबा बालक सिंघ जी का जन्म संवत 1856 बिक्रमी में गांव सरवाला जिला कैंबलपुर में भाई दयाल सिंघ के घर माता भागभरी की गोद में श्री दशमेश जी से 91 वर्ष पश्चात हुआ। नवीन कूके लिखारियों—श्री आलम तथा चक्रवर्ती ने बिना किसी प्रमाण के जन्म संवत 1841 निश्चित कर लिया है। इस हिसाब से वह दसम पातशाह से 76 वर्ष बाद में हुए हैं।

बाबा जी गांव छोई जिला कैंबलपुर में दुकान करते थे। वहां से आप हज़रो आ गये। इसलिए आप हज़रो निवासी प्रसिद्ध हो गये।

एक मान्यता है कि बाबा जी ने उस क्षेत्र के एक सहजधारी गुरमुख सिख, भगत जवाहर मल से उपदेश लिया और भजन बंदगी करके प्रसिद्ध हुए। आप दस गुरु साहिबान को इष्टदेव मानते थे। गुरबाणी की विचार तथा शबद कीर्तन के बड़े प्रमी थे। लोग उन्हें भाई साहिब कह कर बुलाते थे तथा सम्मान करते थे। ज्ञानी ज्ञान सिंघ ने **पंथ प्रकाश** में जहां उदासी, निरमले तथा निहंग सिंघों का हाल लिखा है वहां उनके बारे में लिखते हैं—

नाम सिंघ बालक पै पालक पैगंबरो के,
अंबर के मालक अडंबरों के तिआगी हैं।

बाबा जी ने कभी नहीं कहा था कि वे सिखपंथ के 11वें गुरू हैं या उन्हें श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी ने अजापाल सिंघ के रूप में गुरुता दी है। वह तो अपने आप को दस गुरू साहिबान का सिख मानते थे। गुरबाणी का आश्रय रखते थे। भाई रतन सिंघ भंगू, भाई संतोख

सिंघ या ज्ञानी ज्ञान सिंघ आदि किसी समकाली इतिहासकार ने यह बात नहीं लिखी है। गुरूता की फर्जी कहानी सन, 1932 ई में पहली बार संत निधान सिंघ आलम ने फैलायी थी।

बाबा राम सिंघ :

बाबा राम सिंघ जी का जन्म माघ सुदी पंचमी संवत 1872 बिक्रमी को गांव भैणी राइआ, जिला लुधियाना में भाई जसा सिंघ तरखान के घर माता सदा कौर की गोद में हुआ।

(—महानकोश पृ. 774)

आपके माता पिता अच्छे गुरसिख मेहनतकश थे। उनके विचारों तथा संस्कारों का प्रभाव आप पर भी पड़ा। इसलिए बचपन से ही आप धार्मिक रुचि के थे।

बाबा राम सिंघ दस गुरू साहिबान को अपना गुरु मानते थे। गुरबाणी का आश्रय रखते थे। सिखो के प्रचारक तथा सुधारक थे। परंतु कूकों ने जिस प्रकार बाबा बालक सिंघ की गुरुता की कल्पित साखी जोड़ ली है, उसी प्रकार श्री राम सिंघ को श्री दशमेश जी का अवतार तथा 12वां गुरू प्रकट करने के लिए मनघढ़ंत दोहिरे तथा साखियां घंड़ ली गयी हैं।

बाबा राम सिंघ को 12वां गुरु सिद्ध करने के बारे में इनके सभी लेख कल्पित तथा मनघड़ंत हैं जिनका कोई सिर पैर नहीं है। वह उनके अकीदे के उलट है।

बाबा जी ने अपने एक प्रेमी, भाई राय सिंघ, गांव मदीहर जिला फिरोजपुर को उपदेश करते हुए कहा था :

गरू दसम की रीत संभालो। लोक दुहन के जो रखवालो।
पाँच कका वा नाम शनान। दान क्रिया सतिगुर सुखदान।
गुरु ग्रंथ में जोई लिखिआ। सेई मन में धरो सिखिआ।

उनके अनेक लेखों तथा चिट्ठियों में यही विचार मिलते हैं।, जिनसे कूके अब इनकार करने लग गये हैं।

22 वर्ष की आयु तथा सन 1837 में बाबा जी शेरे पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ के पौत्र कंवर नौनिहाल सिंघ की फौज में भर्ती

हुए। सन 1846 ई. तक उन्होंने सिख फौज की नौकरी की। उस दौरान ही वे सन 1841 ई. में हजरों में बाबा बालक सिंघ जी को मिले। उनकी संगत द्वारा भजन बंदगी में और अधिक जुड़ गये। उस समय उनका फौज या सिख जनता पर कोई प्रभाव नहीं था। कोई उन्हें गुरु नहीं मानता था।

शेरे पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ के पश्चात लाहौर दरबार अंग्रेजों, डोगरों तथा संधावालियों की साजिशों के कारण खानाजगी का अखाड़ा बन गया। अंग्रेज सामराज्यवादी सारे भारत में छा गये थे। पंजाब में लड़ाई शुरू करके कब्जा करना चाहते थे। डोगरे तथा संधावालीये उनके पिट्ठू थे। सन 1845 से 849 तक सिखों तथा अंग्रेजों की जितनी लड़ाइयां हुई, उनमें पंजाब की आजादी के लिए लड़ने वाले सरदार शाम सिंघ अटारी, सरदार चतर सिंघ, शेर सिंघ बाबा महाराज सिंघ, बाबा बिक्रम सिंघ उने वाले सरदार सूरत सिंघ तथा सरदार अजीत सिंघ लाडला मुखी थे।

जिस प्रकार सरदार लहणा सिंघ मजीठिया लाहौर दरबार की दुर्गति देख कर बनारस चले गये थे, इसी प्रकार बाबा राम सिंघ फौजी नौकरी छोड़ कर अपने गांव भैणी (अंग्रेजी इलाके) में चले गये। उनके साथ भाई हरनाम सिंघ गढ़दीवाला तथा भाई काहन सिंघ भी फौज की नौकरी छोड़कर चले गये।

इंदर सिंघ चक्रवर्ती ने बाबा राम सिंघ का जीवन लिखा है। उसका नाम है "मालवेंद्र"। उसमें चक्रवर्ती जी लिखते हैं :

(1) रफल सुटी दरिआ विच बैठे हो अटंक।
किहा इह वी सी पिआ साडे गल कलंक।

(मालवेंदर पृ. 39)

(2) असीं ते हुण हां चलदे, सति सिरी अकाल।
आवे किसे जे चलणा रल के साडे नाल। (मालवेंदर पृ. 41)

रणक्षेत्र में से किसी सिपाही का शस्त्र फेंक कर दौड़ जाना कायरता की निशानी है।

संत इंदर सिंघ चक्रवर्ती ने यह लिख कर बाबा जी के व्यक्तित्व को घटिया करके दर्शाया है।

सिख को संत सिपाही तथा शस्त्रधारी श्री गुरू हरिगोबिंद साहिब छटी पातशाही ने बनाया है। श्री दशमेश पिता ने खालसा की साजना करके कृपाण को रहित में शामिल किया है।

परंतु बाबा राम सिंघ द्वारा रणक्षेत्र में से बंदूक फेंक कर गाँव चले जाना तथा उसको कलंक बताना, दशमेश गुरु का रहित तथा शिक्षाओं के विपरीत्त है। खालसा पंथ उन्हें 12वां गुरू कैसे मान सकता है?

दूसरी बात इंदर सिंघ चक्रवर्ती ने इससे बढ़ कर दुखदायी लिखी है कि बाबा जी ने गांव जाकर अपने भाई बुद्ध सिंघ को कहा कि मेरे केश जला दो। जैसा कि—

महाराज, बुद्ध सिंघ दे, हथ मिशाल फड़ा।
कहिंदे लाउ असां नूं लहिणा सिंघ बुझास।
लहिणा सिंघ जी आखिआ इउ ना साड़ो केस।
आहदे इह ना रखणी सिखो असीं मलेछ।
छोटे छोटे रहि गए बावरीआं जिउं वाल।

(देखें मालवेंदर पृ. 47)

पावन पवित्र गुरबाणी वाक है :—

"साबत सूरत दसतार सिरा।"

दशम पातशाह का फुर्मान है :—

निशाने सिखीं ई पंज हरफ काफ।
हरगिज ना बाशद इ पंज मुआफ।
कड़ा कारदो कछ कंघा बिदां।
बिला केश हेच असत जुमला निशाँ।

रहितनामों में अंकित है कि केश कटवाने वाला पतित होता है। हम रोज अरदास में कहते हैं —"सिखी केसों सुआसों के साथ निभे" भाई तारु सिंघ ने खोपड़ी उतरवा ली परंतु केश नहीं कटवाये। अहमद शाह अब्दाली ने बाबा आला सिंघ के केश कटाने चाहे, पर उनकी पत्नि ने नहीं काटने दिये। उस स्थिति में जो बाबा राम सिंघ

अपने छोटे भाई बुद्ध सिंघ को स्वयं कहें कि "मेरे केस साड़ दे" वे खालसा पंथ के गुरु नहीं हो सकते ।

तीसरी बात इदर सिंघ चक्रवर्ती ने अति दुखदायी लिखी है कि बाबा राम सिंघ ने श्री गुरू ग्रंथ साहिब की बीड़ जला दी । चक्रवर्ती जी लिखते हैं—

लै के बीड़ दरबार दी उपर बालण पाइि ।
सफा फूहड़ीआं विच धर, तीली दिती लाइि ।

(मालवेंदर पृ. 27)

रणक्षेत्र में से बंदूक फेंक कर भागना कायरता है । केश जलाना कुरेहित है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब की बीड़ को जलाना पाप है ।

ये तीनों बातें सिखी आचरण तथा जीवन पद्धति के बिल्कुल विपरीत हैं । मानसिक कमजोरी तथा निराशा की द्योतक हैं । बीड़ जलाने की कहानी इसलिए जोड़ी गयी लगती है कि कूकों में से गुर-बाणी का सम्मान बिल्कुल खत्म करके उनको व्यक्तिगत गुरुडम के जाल में और अधिक जकड़ दिया जाये ।

एक बार जब बाबा राम सिंघ जी दीपमाला के अवसर पर श्री दरबार साहिब अमृतसर के दर्शन करने आये तो श्री अकाल तख्त हाजिर हुए । 100 रुपये भेंट करके अरदास के लिए कहा । पुजारियों ने उनकी अरदास नहीं की । बाबा जी ने पुजारियों को कहा— **"अरदास जरुर करो" आप हमको यथायोग्य तनखाह (दण्ड) लगाओ, हमें स्वीकार्य है । परंतु पंथ में फूट न डालो, मैं गुरु नहीं, मैं तो गुरु का दास हूं ।"**

बाबा राम सिंघ नीले वस्त्र डालते और दस्तार में खण्डा रखते थे । उनके साथ निहंग हरनाम सिंघ गढ़दीवाला जिला होशियार पुर तथा भाई काहन सिंघ भी नीले वस्त्र डालते तथा शस्त्र रखते थे ।

बाबा राम सिंघ ने फौज में भर्ती होने के समय बाबा महाराज सिंघ जी से अमृतपान किया जो बड़े इनकलाब पसंद थे । जिन्होंने विदेशी राज्य के विरुद्ध अटूट संग्राम किया । क्योंकि बाबा बालक सिंघ राजनीतिक रुची के नहीं थे, इसलिए उन्होंने श्री राम सिंघ को भजन बंदगी की ही अधिक प्रेरणा दी । आपने उसी मार्ग को अपनाया

इसलिए आपके सतसंगियों का नाम नामधारी प्रचलित हो गया। फिर कुछ लोग शब्द कीर्तन में कूक (चीख) मारने लग गये तथा नाचने लग गये, जिससे कूका शब्द प्रसिद्ध हो गया। भाई काहन सिंघ की भांति ज्ञानी ज्ञान सिंघ ने भी यही लिखा है—

सही नामधारी आहि तिनको उचारी,
कूका मारने ते कूके जगत बखान है।

उस समय अंग्रज किसी अग्रणी व्यक्ति के आस पास सिखों के एकत्र होने को खतरनाक समझते थे। इसलिए उन्होंने बाबा राम सिंघ जी के साथ सी.आई.डी. के ऐसे लोग लगा दिये जो उनको दशमेश जी का अवतार तथा खालसा पंथ का 12 वां गुरु प्रकट करें। इसका मकसद यह था कि सिखों में विरोध उत्पन्न हो।

इस प्रकार कुटिल नीतिवान अंग्रेजों ने बाबा राम सिंघ को दोनों ओर से फंदे में फंसा कर खत्म करने का यत्न किया। भोले भोले कूके अंगरेजों के तने हुए गुरूडम के जाल में फंस गये, जिसका नतीजा यह हुआ कि कूका लहर की पोजीशन सिखों में खराब हो गयी।

कूकों ने 14-15 जून 1871 को अमृतसर में बूचड़ों की मार काट की। इस पर चार नामधारियों को राम बाग अमृतसर के एक बढ़ के वृक्ष के साथ बांध कर फाँसी की सजा हुई। 14-15 जनवरी 1872 को कूकों ने मालोद तथा मलेर कोटले पर हमला किया। इस गड़बड़ के कारण डिप्टी कमिशनर मिस्टर कावन लुधियाना ने 50 कूकों को तोपों से उड़वा दिया। बाबा राम सिंघ 17-18 जनवरी की रात को लुधियाने पहुंच गये। उन्हें पांच साथियों सहित गिरफतार करके ब्रह्मा में जलावतन कर दिया गया। सन 1885 में मौलमीन (ब्रह्मा) में बाबा जी का देहांत हुआ जिसको कूके मानने से इनकार करते हैं।

भैणी में पुलिस की चौकी बिठा दी गई। अंग्रेजों ने कूकों को इतना डराया धमकाया कि बाबा जी की जलावतनी की आधी सदी बाद तक किसी ने कोई कुर्बानी नहीं दी। अंग्रेज सरकार के विरुद्ध किसी ने चूं तक नहीं की।

अंग्रेजों के धमकाये हुए कूकों ने निहंगों के नीले वस्त्रों का त्याग दिया जो कि फौजी वर्दी थी। चंडी दी वार तथा शस्त्र नाम माला पढ़ते हुए कृपाण उतार दी। उसके स्थान पर ऊन की माला डाल ली। कड़ाह-प्रसाद कृपाण भेंट करना छोड़ दिया, जिसकी मर्यादा छटे गुरु साहिब से चली आ रही थी। शस्त्र त्याग कर ऊन की माला तथा पीतल के गडवों के धारणी हो गये।

बाबा राम सिंघ जी अपनी दस्तार में खण्डा रखते थे। उनकी सभी प्रचीन तस्वीरों में खण्डा मिलता है परंतु उनके जानशीनों की दस्तार में से खण्डा अलोप हो गया। शस्त्रधारी बूचड़ों को काटने तथा आक्रमण के धनी वीर रस के शब्द पढ़ने वालों को अंग्रेजों ने इतना धमकाया कि कि वे अपने आपको वैष्णव तथा अहिंसक बताने लगे।

ब्रहमा से जो पत्र बाबा जी ने लिखे उनका कुछ विवरण इस प्रकार है :

1. देहां दी मेला तो अनित हैं। गुरु ग्रंथ जी मानीअै प्रगट गुरां की देह। जो सिख मिलबो चहे खोज इनही में लेह।' और गुरु जी ने लिखा है बाणी गुरू, गुरू है बाणी विचि बाणी अमृत सारे।'
(चिट्ठी 46)
2. होर भाई दसां पातशाहियां दे पिछे गुरु तां महाराज जी श्री गुरु ग्रंथ साहिब नूं अस्थापन कर गये हैं। जो सदा ही इस्थित हैं, और गुरू कोई नहीं।
(चिट्ठी नं. 55)
3. तुसीं गुरु ग्रंथ जी दा धियान धरना। गुरु ग्रंथ साहिब गुरु जी दी देह हन प्रतख।
(चिट्ठ नं. 57)
4. श्री राम सिंघ जो, साथियों के पूछने पर चिट्ठी में लिखते हैं : "समूह संगत खालसे जी को श्री वाहिगुरू जी की फतिह बुलाणी वाचणी जी। भग गुरु ग्रंथ साहिब दे पाउ जितने पुज आउण।
(अरदास तीसरी)
5. बाबा जी के जीवन में यह घटना आती है कि एक बार कुछ साधु एक पोथी उठाकर आ रहे थे। आपने उन्हें पूछा—"यह

क्या ?" साधुओं ने कहा—श्रीमद भागवत। बाबा जी ने कहा "हमने तो श्री गुरू ग्रंथ साहिब समझा था हमें क्या पता था कि तुम कच्ची बाणी उठाये फिरते हो।"

6. बाबा जी अपने आप को गुरु नहीं मानते थे। एक पत्रिका में लिखते हैं—जब अरदास लिखण लगदे हां, तदों ही गुरु साहिब अगे, दोइ कर जोड़ के बेनती करदे हां, हे गुरु साहिब जो तैनूं हछी लगे, सो मेरे ते लिखाई। जो मेरे ते गुरु साहिब लिखवांदे हन, मैं संगत की ओर लिख भेजदा हां।

बाबा राम सिंघ जी की ब्रह्मा में जो चिट्ठयां तथा अरदासें आदि भाई हरनाम सिंघ के द्वारा आई, वे भाई संतोख सिंघ, गांव मोद गिल, जिला गुरदासपुर के पास एक पोथी के रुप में थीं। सन 1927-28 में वह पोथी बाबा प्रताप सिंघ के पास आई। उन्होंने संत टहल सिंघ निहंग को उतारा करने के लिए दी। उतारे से पूर्व सारी चिट्ठियां सुनीं। जिस स्थान पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की गुरुता का ज़िक्र आया था, लिखा था कि बाबा जी गुरु नहीं हैं, बाबा प्रताप सिंघ ने उन पर लाल स्याही फेर दी। निहंग टहल सिंघ ने उस पोथा के दो उतारे करवा लिये। एक बाबा प्रताप सिंघ को सुना दिया, दूसरा अपने पास रख लिया। बाबा जी ने वह पोथी (रामसर) भैणी के कूएँ के पास भिगवा कर कड़ाही में डालकर जलवा दी। निहंग टहल सिंघ ने उसका उतारा 1938 में प्रकाशित करवा दिया। इससे पाठकजन अनुमान लगा सकते हैं कि कितनी तबदीला की गयी।

बाबा जी के साठ साल के पश्चात पिछले तीस चालीस सालों में नवीन कूका लिखारियों ने—श्री आलम तथा चक्रवर्ती ने जो कुछ लिखा है, उनमें नामधारियों को खालसा पंथ से अलग करने का यत्न किया गया है। उन्होंने मित्रता की आड़ में दुश्मनी की है।

बाबा राम सिंघ सतगुरु नहीं थे कहलवाते। वे कहा करते थे कि मैं सतगुरू का पहरुआ हूं, पहरेदार हूं। आज बाबा राम सिंघ जी को मानने वाले किस मुंह से कहते हैं कि हम श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु नहीं मानते?

"सतजुग" के शताब्दी अंक में लिखा है कि श्रीमान बाबा प्रताप सिंघ जी ने संवत 1963 बिक्रमी से 2016 तक 53 साल लगातार

कई बार 7100 अखण्ड पाठ करवाये हैं। यदि कूके गुरबाणी को गुरु नहीं मानते तो उन्हें नितनेम, अखण्ड पाठ तथा कीर्तन करने की क्या आवश्यकता है ? वे अपने स्थानों तथा दीवानों में श्री गुरू ग्रंथ साहिब का प्रकाश क्यों करते हैं ?

नामधारियों में "वरनीआं" करने पर बड़ा जोर दिया जाता है। एक "वरनी" में किसी बाणी या शब्द के 2700 पाठ किये जाते हैं। यदि गुरबाणी को गुरु नहीं मानना तो वरनिओं का क्या लाभ है ?

सैंकडे स्थानों पर कूके ग्रंथी तथा पाठी सप्ताह या अखण्ड पाठ करके पूजा भेंट लेते हैं। श्री गरु ग्रंथ साहिब के सामने खड़े हो कर अरदास करते हैं। अरदास हमेशा अपने इष्ट के सामने की जाती है। क्या वे पाखण्ड करते हैं ?

गरबाणी का निननेम कीर्तन तथा पाठ करते हुए उसको गुरू मानने से इनकार करना बहुत बेतुकी, बेदलीलो, हास्यास्पद तथा "रंधड़ का रंघरऊ पीसणे का पीसणा" वाली बात है।

यदि इन्होंने गुरबाणी का सम्मान नहीं करना तो उपरोक्त बातें करने की कोई आवश्यकता नहीं। गुरबाणी का पाठ कीर्तन करते हुए फिर श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सम्मान न करना "तालों घुथी डूमणी गावै आल बेताल" वाली बात हुई।

हम नामधारी बन्धुओं को कहना चाहते हैं कि अब मजहब में व्यक्ति पूजा नहीं चल सकती। खलीफे तथा पोप खत्म हो गये हैं। राजनीति में से रजवाड़ा शाही तथा शहिनशाहो का अंत हो गया है। उसके स्थान पर लोक राज तथा समाजवाद ने ले ली है। इसलिए युग पुरुष श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने "गुरु ग्रंथ तथा पंथ" का जो सुनैहरी नियम हमें दृढ़ करवाया है, उसे स्वीकार करते हुए गुरमत के धारणी बनें।

11. देहधारी गुरूडम की शंकाओं के उत्तर

शंका—कई देहधारी गुरुडम के पक्षधर यह कहते हैं कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब तो पोथी है और पोथी बोलती नहीं। स्वयं पढ़े हों तो पाठ किया जा सकता है नहीं तो कोई पढ़कर सुनाये तो कुछ समझ आ सकती है, परंतु देहधारी गुरु तो स्वयं उपदेश करता है। इसलिए यह पोथी किस प्रकार हुई ?

समाधान—आओ हम पहले यह देख लें कि हम आस-पास के वातारण व दुनियाँ के ज्ञान की अनुभूति किस प्रकार करते हैं ? इस अनुभूति के लिए हम प्रकृति द्वारा प्रदत्त पाँच इंद्रियों की सहायता लेते हैं। पदार्थों को देखकर, सूंघ कर, चख कर, सुनकर तथा छू कर उनकी पूरी तस्वीर हमारे दिमाग में उतर जाती है। इन इंद्रियों में से किसी एक या सारी इंद्रियों द्वारा हो प्रत्येक वस्तु के अस्तित्व की पहचान की जाती है।

शबद का वास्तविक तात्पर्य आवाज, ध्वनि या स्वर से है। आवाज या शबद से ही हमें समझ पड़ती है या ज्ञान प्राप्त होता है। जैसे कोई व्यक्ति एक कमरे में बंद बैठा हो। बाहर जोर की बरसात हो रही हो। बरसात की आवाज सुनकर वह तुरंत कह उठता है कि बाहर बरसात हो रही है। बरसात पड़ते हुए उसने देखी नहीं होती। केवल बरसात पड़ने की आवाज (शबद) से वह समझ जाता है और उसका कथन होता भी सत्य है।

आप पहाड़ पर जा रहे हैं। दूर नीचे किसी वादी में पानी बह रहा है। पानी की जोरदार आवाज सुनकर आप कह देते हैं कि दूर नीचे कोई नदी बह रही है। नदी बहते हुए आपने देखी नहीं, केवल चलते पानी की आवाज से ही आपको ज्ञान होता है कि नदी नीचे चल रही है।

आवाज के लिखित रूप को शब्द कहा जाता है। जैसे बरसात पड़ने की आवाज सुनकर बरसात पड़ने तथा पानी बहने की आवाज से नदी का पता चलता है, वैसे ही संसार की बहुत सी वस्तुओं का ज्ञान हमें आवाज (**शबद**) द्वारा होता है।

मनुष्य जो कार्य करता है वह अधिकतर देख कर या सुनकर ही करता है। केवल आवाज तो चाहे हम कानों से ही सुन सकते हैं परंतु 'शबद' को आंखों द्वारा भी देखा जा सकता है और कानों से सुना भी जा सकता है। इसका मतलब यह हुआ कि "शबद" ही एक ऐसी वस्तु है जिसके सुनने तथा पढ़ने से हमें किसी वस्तु का ज्ञान होता है या सूझ होती है।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब क्या हैं? **शबदों का संग्रह।** जिस प्रकार सांसारिक वस्तुओं का ज्ञान शब्द से होता है, उसी प्रभु के बारे में ज्ञान, गुरू के **शबद** द्वारा होता है। इसे हम गुरु कहते हैं—गुरु मानते हैं। किसी का शरीर तो गुरू नहीं होता। उसमें निवास करने वाली **ज्योति** तथा उस **ज्योति** का **शबदों** द्वारा प्रगटाव ही गुरू कहा जा सकता है।

कौन कहता है कि गुरू ग्रंथ साहिब बोलते नहीं? गुरु ग्रंथ साहिब की आवाज आँखों के द्वारा अन्दर पहुंचती है, जिस प्रकार जीवित मनुष्य को आवाज कानों के द्वारा पहुंचती है। जिस प्रकार से आंख ज्ञानेंद्री है उसी प्रकार ही कान है। अन्तर क्या हुआ? यह कोई आवश्यक नहीं कि कोई व्यक्ति या वस्तु बोलकर ही ज्ञान दे। मिसाल के तौर पर एक व्यक्ति ने शिमला जाना है! वह किसी चौराहे पर पहुंचता है। चौराहे पर एक सीमेंट का खंभा लगा है। उस खंभे पर चार हाथ लोहे के बने हुए हैं। ये हाथ चारों दिशाओं की ओर फिट किये हुए हैं। इन लोहे के हाथों में से एक पर **चण्डीगढ़,** दूसरे पर **अंबाला** तीसरे पर **पटियाला** तथा चौथे पर **शिमला** लिखा हुआ है। इन रास्तों से अनजान व्यक्ति शिमले की ओर इशारा करने वाले हाथ से पढ़कर यह जान लेता है कि शिमला इस दिशा में है। अब बताओ कि उस खंभे पर लगे हाथ ने बोल कर रास्ता बताया था कि शिमला इस ओर है?

वास्तव में जिस प्रकार कान, आवाज सुनकर बुद्धि को जानकारी देते हैं उसी प्रकार आंखें देखकर, श्रव्य दर्शन करके जानकारी देती हैं। आगे उस कार्य को करने या न करने के बारे में बुद्धि सोचती है और शरीर को कार्य करने के लिये प्रेरणा देती है। अतः जिस प्रकार यात्री शिमले का बोर्ड देखकर उस दिशा में चल कर शिमले पहुंच जाता है,

उसी प्रकार गुरबाणी पढ़कर जो मनुष्य अपना जीवन **'गुर फुरमाए गरसिख करणा'** के महावाक्य के अनुसार ढाल लेता है तो वह निश्चय ही प्रमात्मा का मिलाप करके गंतव्य स्थान पर, लक्ष्य पर पहुंच जाता है।

शंका— देहधारी गुरुडम के समर्थक एक तर्क यह देते हैं कि यदि कोई अनपढ़ हो तो वह गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी के ज्ञान को कैसे समझे ? उसे बाणी सुनाने अथवा समझाने के लिए देहधारी गुरु की जरुर आश्यकता है।

समाधान :— गुरबाणी को पढ़कर या व्याख्या करके सुनाने वाला हमारा गुरु नहीं हो सकता। वह संत, भक्त, गुरमुख सिख या ज्ञानी हो सकता है। उदाहरण के तौर पर एक अनपढ़ स्त्री है। उसका पति प्रदेस गया है। वह अपनी पत्नि को पत्र भेजता है। उसकी पत्नि पत्र मिलने पर खुश होती हैं, परंतु स्वयं नहीं पढ़ सकती। वह चिट्ठी के पढ़वाने के लिए किसी पढ़े-लिखे व्यक्ति के पास ले जाती है। वह व्यक्ति चिट्ठी पढ़कर सारा हाल उसे समझा देता है और आरंभ को शब्द 'मेरी प्यारी पत्नि' भी पढ़कर सुनाता है। इन शब्दों को तथा संपूर्ण चिट्ठी पढ़कर सुनाने वाला यदि यह सोच बैठे कि चिट्ठी पढ़ने वाला ही उसका पति है तो यह उसकी बहुत बड़ी मूर्खता होगी।

जिस प्रकार चिट्ठी पढ़कर सुनाने वाला पति नहीं बन जाता उसी प्रकार गुरबाणी का उच्चारण करने वाला या व्याख्या करने वाला गुरु नहीं हो सकता। जैसे चिट्ठी लिखने वाला ही पति है वैसे ही गुरु वह है जिसने मूल बाणी उच्चारित की है, या इसकी रचना की है।

शंका—कई गुरुडम समर्थक यह प्रश्न करते हैं कि बाणी का अर्थ कौन बताए ? इसलिए देहधारी गुरू की आवश्यकता है।

समाधान—जिनके द्वारा बाणी प्रगट हुई है, वे गुरु हैं। जो अर्थ बताते हैं वे प्रकट करने वालों के तुल्य नहीं हो सकते। विद्यालयों में सैंकड़ों अध्यापक बड़े-बड़े खोजियों के स्थापित किये गये सिद्धांत विद्यार्थियों को पढ़ाते है परंतु वे उस खोजकर्ता या सिद्धांत के प्रतिपादक की पदवी का दावा नहीं करत जो कि वास्तविक तथा उच्च श्रेणी

के खोजियों को प्राप्त है। गुरबाणी के अर्थ समझाने वाला गुरमुख, सिख, ज्ञानी तो हो सकता है परंतु गुरु नहीं हो सकता। क्योंकि बाणी का संबंध जैसा उसके साथ है, वैसा ही हमारे साथ है।

शंका—कई अल्प सूझ वाले यह कहते है कि "गुरबाणी में गुरु तथा नाम की महिमा दर्शायी गई है– यह स्वयं गुरु तथा नाम नहीं हैं।

समाधान—ऐसे सज्जन गुरबाणी की अच्छी तरह विचार न करने के कारण ऐसी भूल कर बैठते हैं। गुरबाणी में ही नाम है। नाम, बाणी से भिन्न नहीं और बाणी, नाम से भिन्न नहीं। नाम की प्राप्ति गुरबाणी से ही होती है। यथा :

गुरबाणी वरती जग अंतरि, इसु बाणी ते हरि नाम पाईदा ॥

(पृ. 1066)

शंका—कई देहधारी गुरुडम के समर्थक यह शंका करते है कि बाणी में आया है कि—

"गुर के चरन रिदै लै धारउ।" चरण किसी देहधारी गुरु के ही हो सकते हैं; बाणी के नहीं। इसलिए बताओ कि ध्यान किस पर धरें ?

उत्तर :—गुरू के शब्द का अभ्यास, सुमिरन तथा ध्यान ही गुरु के चरणों को हृदय में टिकाना है। '**चरणों**' से तात्पर्य हाड़-मास के बने हुए चरण नहीं है। यदि ऐसा ही भाव हो तो देहधारी गुरु के हाड़-मास के चरणों को कोई सेवक अपनी छाती चीरकर दिल में कैसे टिकायेगा ? गुरबाणी में अनेक स्थानों पर '**चरण**' शब्द गुरु की याद तथा गुरु के ध्यान के अर्थों में प्रयोग किया गया है। जैसे—

गुर के चरन हिरदै वसाइ मूड़े,
पिछले गुनह सभ बखसि लइआ ॥

(आसा महला 3, पटी पृ. 435)

—चरण कमल संगि प्रीति कलमल पाप टरै ॥

(आसा महला 5, पृ. 459)

—चरन कमल हिरदै वसहि संकट सभि खोवै ॥

(वार गउड़ी महला 5, पृ. 322)

चरण कमल की आस पिआरे। ॥ जम कंकर नसि गये बिचारे ॥
(आसा महला 5, पृ. 389)

यदि आंखों द्वारा ही देहधारी के चरणों का ध्यान धरने की बात हो तो जिम व्यक्ति की आंखें ही नहीं हैं बताओ वह किसी का ध्यान किस प्रकार धरेगा ? दूसरे बाहरमुखी चरण जो नाशवान हैं, का ध्यान मनुष्य अविनाशी प्रभु (जो कभी नाश नहीं होता) में नहीं लगा सकता।

गुरू का शब्द ही अविनाशी वाहिगुरू का ज्ञान है। यही हमें उस तक पहुंचा सकता है।

शंका—कई देहधारी गुरुडम के अमर्थक यह शंका करते हैं कि विशेष व्यक्तित्व में विशेष चुंबकीय आकर्षण होता है जिसके द्वारा सिख उसकी ओर प्रेरित होता है।

समाधान—चुंबकीय शक्ति शरीर में है या जीवन में ? शरीर तो प्रत्येक मनुष्य का एक समान तत्वों का बना हुआ है। दिखावा तो केवल रहन-सहन में होता है। और जिन्होंने निर्मल रीति धारण कर ली है उनमें आकर्षण अवश्य उत्पन्न हो जाता है। परन्तु वह आकर्षण शरीर में नहीं, चाल-चलन में है, जीवन के रवैये में है। शरीर के नाश हो जाने से इस शरीर का नाश नहीं होता। इस हिसाब से तो शहीदों के जीवन कारनामे रहती दुनियां तक अपना प्रभाव रखेंगे।

सतगुरु साहिबान को समय में अनेक गुरसिखों ने सिखी का प्रचार किया। भाई मनसुख ने संगलाद्वीप में रहकर राजा शिवनाभ को गुरू का सिख बनाया। तीसरे गुरु, श्री गुरू अमरदास जी के समय में 22 मंजियों (प्रचार केंद्रों) के उच्च आचरण के गुरसिख प्रचारक हिंदुस्तान से बाहर निकटवर्ती टापुओं में सिखी का प्रचार करते रहे। चौथे पातशाह श्री गुरू रामदास जी ने उच्च जीवन वाले गुरसिखों को मसंद (प्रचारक) की संज्ञा देकर प्रचार हेतु दूर-दूर तक भेजा। पांचवें तथा छटे गुरुजी के काल में भी भाई गुरदासजी ने आगरा तथा काशी मेंसिखी का प्राचर तथा प्रसार किया। भाई कट्टू तथा गढ़िये ने कश्मीर में सिखी का प्राचर किया। सातवें पातशाह के समय में भाई

गोइंदे, तिलोके तथा कटारू ने काबुल में सिखी का उपदेश दिया— इसी प्रकार आठवें तथा नौवें पातशाह के समय भी भाई मखण शाह जैसे गरसिखों ने सिखी का प्रचार किया। इन सब ने संगतों को गुरु के संग जोड़ा है, स्वयं को गुरु नहीं कहा।

शंका—देहधारी गुरुडम के समर्थक कई बार यह कहते भी सुने गये हैं कि 'गुरु' केवल उपदेश द्वारा ही सहायता नहीं करता बल्कि रुहानी शक्ति द्वारा भी सिख की आत्मा की सहायता करता है।

समाधान—इस बहानेबाजी का उत्तर इस प्रकार है।

गुरू के संग मिलाप, (हम ऊपर गुरबाणी के प्रमाणों द्वारा बता चुके हैं) बाणी द्वारा ही होता है और अब भी जो देहधारी गुरू कहलवाते हैं वे अपने **'भावों'** को अपने द्वारा रचित 'रचना' द्वारा ही प्रकट करते हैं। यदि उनके उपदेशों को इस सिलसिले में से बाहर निकाल दें तो उनका अपने सेवकों के संग क्या संबंध रह जायेगा।

परंतु यदि यह कहें कि गुरु अपनी आत्मिक शक्ति द्वारा सहायता करते हैं तो फिर वे गुरु, जिनकी 'आत्मा' देह की कैद में से निकलकर सर्वव्यापक निरंकार में लीन हो गई है, अधिक सहायता कर सकते हैं। आत्मा का तो नाश नहीं और गुरु नानक देव आदि दस गुरु, आत्म मण्डल में पूर्ण आत्मिक जीवन के मालिक हैं। फिर वे पूर्ण मदद दे सकते हैं; इसलिए किसी और मनुष्य को गुरु मानने की क्या आवश्यकता है?

शंका—देहधारी गुरुडम के कई समर्थक 'शब्द' का अर्थ किसी प्रकार की विशेष ध्वनि से करते हैं, जिसे सुनने के लिए वे कई प्रकार के आसन तथा विषम साधनाएं करते हैं।

समाधान—इसके बारे में विचार यह है कि सिख इतिहास में जितने सतगुरु साहिबान या सिखों के अंतिम समय का वर्णन आया है उन सबकी बाबत यही बताया गया है कि स्नान करके बाणी पढ़ते हुए शहीद हुए या नाम का जाप करते हुए गुरपुरी को सिधार गये।

किसी के बारे में यह लिखा हुआ नहीं मिलता कि वह नाक, कान, आँख बंदकर के किसी नाद के ध्यान में मग्न हो चले थे या योगियों की भांति ब्रह्मघर को फोड़ कर उनकी आत्मा देह में से उड़ गयी।

वास्तविकता तो यह है कि गुरमत में 'शब्द' पद गुरु के उपदेश रूपी वचन गुरबाणी हेतु ही प्रयोग किया है। इस शब्द को कमाने वालों के लिए गुरमुख, संत, साधु आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है।

गुरू कहलवाने वाले जो सज्जन, बाणी को देहधारी गुरु से घटिया दर्जा देते हैं, वे एक बात को भूल जाते हैं कि जब उनकी अपनी देह का विनाश हो जायेगा तो क्या उनका अब का उपदेश सच्चा नहीं रहेगा? यदि इस बात को मान लिया जाये तो फिर किसी भी धर्म पुस्तक का लेशमात्र भी मूल्य नहीं रह जाता।

एक विचार यह भी है कि सत्य का असर अधिक होता है, जब उसे किसी व्यक्ति विशेष की जिंदगी में ढलता हुआ देखें। यह ठीक है कि इसीलिए सिखी मण्डल में भक्तों, गुरमुखों की आवश्यकता है। हम रोज अरदास करते हैं **"सेई गुरमुख पिआरे मेल, जिन्हां मिलिआं तेरा नाम चित आवै"**। परंतु जो गुरु की बताई राह पर चलकर, गुरु के आदेशों की कमाई करके, लक्ष्य तक पहुंचें, वे कभी भी गुरु की बराबरी का दावा नहीं करेंगे और न ही अपने आप को गुरु कहलवायेंगे। सिख इतिहास में से कोई ऐसी मिसाल नहीं मिलती कि बाबा बुड्ढा जी, भाई गुरदास जी, भाई मनी सिंघ जी, भाई तारू सिंघ जी जैसे किसी भी गुरु के सिख ने यह कहा हो कि मैं गुरु हूं।

शंका—कई शरारती, देहधारी गुरूडम के समर्थक यह बहाने बाजी करते हैं कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी तो कागजों की पोथी है जिस पर स्याही से अक्षर लिखे होते हैं। कागज और स्याही कैसे गुरु हो सकते हैं?

समाधान—ऐसे गुरुघर के निंदकों को ऐसी हुज्जतबाजी करने का साहस तभी हो रहा है क्योंकि हम स्वयं ढीले हैं, हमारे गुरमत प्रचार तथा पांच ककरों वाली मर्यादा में ढील आ गई है। यदि हम स्वयं डट जायं तो किसी भी गुरू निंदक को ऐसी हुज्जत करने का साहस न हो। ऐसे मूर्ख लोगों को यह ज्ञात नहीं कि सिख कागज और स्याही की अर्चना नहीं करते बल्कि गुरबाणी की पूजा करते हैं। यदि कोई कोरी पोथी, जिस पर गुरबाणी न लिखी हो, रुमालों में लपेट कर रख दी जाये तो ऐसी पोथी को सिख कभी भी प्रणाम नहीं

करेंगे। सिख की डंडवत तो गुरबाणी के सम्मुख ही है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी की पूजा-पाठ को बुतप्रस्ती कहने वाले महां-अज्ञानी हैं जिन्हें सिख धर्म के सिद्धांत "नाहू पूजीअै' नाहू मंनीअै' सिद्धांत का पता नहीं।

शंका—देहधारी गुरुडम के समर्थक भोले-भाले लोगों को अपने जाल में फंसाने के लिए कहते हैं :

संतन हथ राखी कूंजी ॥ (रामकली महला 5)

यह पंक्ति पढ़ कर धोखा देते है कि कुंजी तो संतों के हाथ में है, संतों के बिना ताला नहीं खुल सकता।

समाधान—उपरोक्त पंक्ति में आया हुआ 'संतन' पद बहुवचन है, एक वचन नहीं। 'संतन' के अर्थ हैं बहुत-से संत अर्थात बहुत से गुरमुखजन अर्थात गुरू संगत। पंक्ति का अर्थ है कि गुरू संगत में जाकर नाम जाप करने से ही प्रमात्मा की प्राप्ति होती है। इस बात की समझ गुरबाणी के शब्दों को समझने तथा विचार करने से होती है। क्योंकि अज्ञानी गुरुओं के अंधे एजेन्ट गुरबाणी तो पढ़ते-समझते नहीं हैं, इसलिए 'शब्द' को न समझ कर ऐसी बेतुकी बातें करते हैं। 'शब्द' की समझ न होने के कारण वे अंधे और बहरे हैं।

सबद न जाणहि से अंने बोले, से कितु आए संसारा ॥

अतः गुरबाणी समझने की कुंजी गुरबाणी ही है। इन दंभियों को किसी ने भी कुंजियों का गुच्छा नहीं दिया है। यह गुरु घर के चोर कुंजियां लाये कहां से हैं?

शंका—कई देहधारी गुरुडम के समर्थक यह कहते हैं कि यदि किसी पुरुष को ग्याहरवां, बाहरवां, तेहरवां गुरु मान लिया जाये तो क्या हर्ज है?

समाधान—इसका उत्तर यह है कि जब सतगुरू साहिबान ने सिखी के आदर्श को संपूर्ण कर लिया, पंथ की सृजना द्वारा उसे नाम, रूप, स्प्रिट, अधिकार तथा 'रहित' प्रदान करके वैयक्तिक स्वरूप बना लिया तो गुरुगद्दी दसम पातशाह ने श्री गुरू ग्रंथ साहिब को देकर 'पंथ' को उनकी हजूरी में गुरु बना दिया। वैयक्तिक गुरुता का सिलसिला सदा के लिए समाप्त कर दिया। इसलिए अब कोई

अकेला व्यक्ति खालसा पंथ का गुरु नहीं हो सकता। दसम गुरु जी ने आत्मा ग्रंथ में तथा शरीर पंथ में, ज्योति गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी में तथा 'जुगति' खालसा पंथ में कह कर गुरु ग्रंथ साहिब के सम्मुख खालसा पंथ को गुरियाई सौंपी हुई है। इसलिए अब किसी मनुष्य का 11वां, 12वां, 13वां गुरु बनने का प्रश्न ही नहीं उठता।

शंका—कई देहधारी गुरुडम के समर्थक यह कहते हैं कि सिख का निश्चय उसे पार लगा देता है, चाहे गुरू कुछ भी हो।

समाधान—सिख धर्म में इस बात को नहीं माना गया है। सिख धर्म ने यह अंध विश्वास नहीं दिया है।

'गुर गुंगे, गुर बावरे गुर के रहीऐ दास।'

बल्कि यह बताया है कि पूर्ण गुरू के बिना निस्तारा नहीं हो सकता। अपूर्ण, अज्ञानी, दंभी तथा पाखण्डी गुरूओं से मुक्ति नहीं हो सकती। ऐसे गुरू, सिख को किसी पदवी पर पहुंचाने के स्थान पर रसातल में फेंक देते हैं। जिनमें कोई आत्मिक शक्ति नहीं, कोई अनुभव नहीं, ज्ञान या करनी नहीं, ऐसे दंभी गुरूओं से बचने के लि; गुरबाणी में संदेश है—

1. **गुर जिना काअं धला चेले नाही ठाउ॥**
2. **नानक अंधा होइि कै दसे राहै,** (सिरी राग महला १, पृ. 58)
   समसु मुहासे साथै॥
   अगै गइआ मुहि मुहि पाहि
   सु अैसा आगू जापै॥ (वार महला १, पृ. 140)
3. **अंधे गुरू ते भरम न जाई॥** (गउड़ी महला 3, पृ. 232)
4. **गुरू जिना का अंधुला,**
   सिख भी अंधे करम करेनि॥ (रामकली महला 3, पृ. 951)
5. **गुरू सदाऐ अगिआनी अंधा,**
   किसु ओहु मारगि पाऐ॥ (गुजरी महला 3, पृ. 491)
6. **अंधा आगू जे थीअै किउ पाधर जाणै॥**
   आप मुसै गति होछीअै किउ राहु पछाणै॥
   (सूही महला १, पृ. 767)

7. **काचे गुर ते मुकति न हूआ ॥** (रामकली महला १ पृ. 932)

8. **अंधे कै राहि दसिऐ अंधा होइ सु जाइ ॥**
होइ सुजाखा नानका सो किउ उझड़ि पाइ ॥
(सलोक महला २, पृ.954)

शंका—कई गुरुडम समर्थक अपने देहधारी गुरू का प्रचार करने के लिए रिद्धियों-सिद्धियों तथा करामातों को अपने गुरू से जोड़कर बताते हैं कि हमारे गुरू में यह करामात है, यह शक्ति है आदि। इस प्रकार कई भोले भाले अनजान श्रद्धालु-जन करामतों तथा रिद्धियों-सिद्धियों के प्रचार से प्रभावित होकर उनके चुंगल में फंस जाते है।

समाधान—सिख धर्म में तो यह दृढ़ करवाया गया है कि—

रिधि सिधि सभु मोहु है, नामु न वसै मनि आइ ॥"
(महला 3, पृ. 593)

बिन तावै पैनण खाण सभु बादि हैं धिगु सिधी धिगु करमाति,
सा सिधि सा करमाति है अचिंत करे जिसु दाति ॥
नानक गुरमुखि हरिनामु मनि वसै ऐहा सिधि ऐहा करमाति ॥
(वार सोरठि महला 3, पृ.650)

अतः, पहले तो इन दंभियों के पास कोई रिद्धि-सिद्धि होती ही नहीं। यदि साधना द्वारा किसी के पास आ भी जाये तो भी गुरु का सिख इन दंभियों पर नहीं ढहता क्योंकि वह जानता है कि रिद्धियाँ-सिद्धियां गुरमुखों के चरणों का दासियां हैं। मानव-जीवन का मनोर्थ इनके भ्रम जाल में फंसना नहीं है।

आओ, हम **शब्द गुरू** का पल्ला पकड़ें। कानों में मंत्र देने वाले **कन्ना मुन्ना कुरँर तूँ, मेरा चेला, मैं तेरा गुरँर।'** कहने वाले पाखण्डियों के फांसे में न आयें। श्री गुरू ग्रंथ साहिब ही केवल ज्ञान का भण्डार हैं। इस खजाने में से लूट-मार करके ही वे अपने आप को गुरू सिद्ध करते फिरते हैं।

—आतमा ग्रंथ विच, शरीर पंथ विच।

—पूजा अकाल की, परचा शबद का, दीदार खालसे का।

उपरोक्त पर पूर्ण निश्चय से अमल करते हुए **गुरू-ग्रंथ पंथ** को स्वयं गुरु मानें और दूसरों को इस सच्चाई के बारे में बताकर भुलेखों से बचायें।

१ੴ वाहिगुरू जी की फतहि।।

सिख मिशनरी कालेज का उद्देश्य

हम सिख हैं।

इसलिए यह आवश्यक है कि हमें सिखी असूलों(नियमों) का पता हो, गुरबाणी के अर्थ भाव, सिख इतिहास की जानकारी, सिख रहित मर्यादा के असूल सिख फिलासफी, सिख सभ्यता की हर गुरसिख को जानकारी होनी अति आवश्यक है। यदि हमें इनका ज्ञान नहीं हो हम कैसे सिख कहला सकते हैं? पाठ हम करते जा रहे हैं, पर यदि कोई हमसे गुरबाणी के किसी वाक्य का अर्थ पूछ ले और हम जवाब न दे सकें तो यह हमारे लिए कितनी शर्मनाक वात होगी। दस गुरू साहिवों एवं प्राचीन गुरसिखों के इतिहास की जानकारी होनी आवश्यक है, यदि हम अपना बेमिसाल इतिहास नहीं जानते तो हम कैसे दूसरे को बता सकेंगे कि हम कौन-सी विरासत के मालिक हैं। सिख रहत् मर्यादा के उसूल कौन-कौन से हैं, इस विषय पर हम आमतौर पर अज्ञानी हैं। घर में पाठ रखना हो या जीवन में कोई संस्कार करना हो, गुरमत क्या है, इसे जानने के लिए हमें ग्रंथी सिंघों या ज्ञानी व्यक्ति पर निर्भर होना पड़ता है। पर क्या सिख होते हुए ऐसे असूलों की जानकारी हमें स्वयं को होनी जरूरी नहीं?

आज हम देखते हैं हमारे में जो कमजोरियां आ रही हें, उसका मुख्य कारण यही है कि हमने सिखी के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की जिमेवारी नहीं समझी। यदि हमें गुरसिखी के असूलों का स्वयं ज्ञान हो तो हम अपने नौजवानों को जो अनजान में दाड़ी व केशों की बेअदवी कर रहे हैं, नशे पी रहे हैं, देहधारी पाखंडी गुरूओं को मान रहे हैं, को गुरबाणी के उसूल दृढ़ करवा कर, खून से लिखा अपना वलिदानी इतिहास सुना कर सिख धर्म की ओर प्रेरित कर सकते हैं। जो नौजवान आज वागी हो रहे हैं तो इसमें उन वेचारों का क्या दोष? दोष तो हमारा अपना है, हमारे प्रचारकों का है, हमारी अगवाई करने वालों का है जो ऐसे नौजवानों को सिख धर्म की ओर नहीं प्रेरित कर सकें।

आज ना तो सिखी हमें माता-पिता से, घर से ही मिल रही है (क्योंकि माता-पिता ही सिखी से दूर हो चुके हैं तथा मादा प्रस्ती में बुरी तरह उलझे हुए हैं) व ना ही सिखी 'खालसा' स्कूलों, कालेजों से ही मिल रही है, क्योंकि किसी स्कूल या कालेज को छोड़कर सिखी के संदेश देने का प्रबंध हम इनमें कर ही नहीं सके या किया ही

नहीं, जहां पहले खालसा, स्कूलों कालेजों में होता था। गुरद्वारों में से सिखी की सिक्षा मिलनी चाहिए थी क्योंकि गुरुद्वारे बने ही सिखी का प्रचार् करने के लिए, पर आज गुरुद्वारों में फैली गुटबाजी, पार्टीबाजी गुरुद्वारे पर कब्ज़े की भूख, गोलक (गुरूद्वारे में चढ़ाए हुए धन) की लड़ाई, नौजवानों के मार्ग में बाधा बनी हुई हैं, जिस कारण वह गुरूद्वारों में हो रहे धर्म प्रचार को नहीं स्वीकारते। फिर जो प्रचारक हमने अपने धर्म स्थानों में लगा रखे हैं, उनमें से बहु-गिनती अनपढ़ हैं। यदि हमारे बहुत सारे प्रचारकों की, ना स्कूली शिक्षा हो, ना वह धर्म के क्षेत्र में पूरा ज्ञान रखते हों, ना हि उच्च महान् जीवन, ना ही प्रचार के लिए मिशनरी उत्साह हो तो फिर यह आशा कैसे रखी जा सकती है कि ऐसे प्रचारक नौजवान पीढ़ी पर अपने प्रचार का अच्छा प्रभाव डाल सकेंगे। सत्य तो यह है कि प्रचारकों का यह क्षेत्र केवल एकमात्र माया कमाने का एक साधन बना कर रख दिया गया है, व प्रचार का वास्तविक उद्देश्य अलोप होता जा रहा है।

जब हम दूसरे धर्मों ईसाई मत, इस्लाम मत आदि की ओर देखते हैं तो उनके प्रचारक व प्रचारक तैयार करने वाली संस्थाएं (अदारे) देख कर दंग रह जाते हैं कि कैसे उन्होंने ग्यारह सालों का लम्बा समय लगाकर लाखों कि गिनती में प्रचारक तैयार किए हैं व प्रचार के क्षेत्र में उन्हें पूरी तरह तैयार किया है। पर जब हम अपने प्रचारकों की ओर देखते हैं तो असहाय से होकर रह जाते हैं क्योंकि हमारे प्रबंधकों ने प्रचारकों की तैयारी के लिए कोई बड़े संगठित व योग्य मिशनरी कालेज नहीं खोला, जहां प्रचारकों को सिख धर्म की पूरी शिक्षा देकर तैयार करके प्रचार के क्षेत्र में भेजा जा सके। योग्य प्रचारकों की कमी कारण ही हमारा धर्म जो दुनिया का सबसे बढ़िया व आलमगीर धर्म है। जो हर देश, प्रदेश में, बिना किसी जात-पात, अमीर-गरीब, वर्ग भेद, रंग रूप आदि बिना भेदभाव प्रचार किया जा सकता है, संसार में तो क्या पंजाब में भी सही ढंग से नहीं प्रचार सका.

उपरोक्त कमी को महसूस करते हुए 'सिख मिशनरी कालेज' आरम्भ किया गया है, जिस द्वारा 'दो साला सिख मिशनरी कोर्स (Correspondonce Course) करवाने का प्रबंध किया गया है। पढ़े-लिखे नौजवान, इस दो साला सिख मीशनरी कोर्स करने के बाद (Elementry Sikh Missionaries)के तौर पर कार्य करेगें। यह गुरमति प्रचारक अपनी कार्य करते हुए प्रचार का काम (Part time) में बिना किसी प्रकार की तन्खाह फल आदि के करेंगे।